चन्दामामा
मई १९७१
75P

लज़्ज़तदार
मज़ेदार
ठंडा मीठा
पारले
एक्स्ट्रा-स्ट्रॉंग
पिपरमिण्ट
एक पैकेट में ९ पिपरमिण्ट—
कितनी कम कीमत पर!
मज़ेदार तरोताज़ा—
तरोताज़ा मज़ेदार
Peppermint
PARLE

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पाँचवीं तारीख़ से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास - २६

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिन भर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है और कोलगेट विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का— अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है।-क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है। इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है— इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

COLGATE
DENTAL CREAM

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए... दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

DC. G. 41 HN

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
पाठकों से हमारे पास प्रति नित्य अनेक पत्र आते हैं जिनमें यह पूछा जाता है कि प्रकाशनार्थ कहानियाँ कैसे भेजी जायँ और उसकी क्या शर्तें हैं? 'चन्दामामा' में कहानियाँ भेजने के पूर्व उसके दो-चार अंकों को पढ़िये, उस स्तर की उत्तम रचनाएँ भेजिये। कविता, निबंध और एकांकी प्रकाशित नहीं करते; वापसी हेतु कृपया डाक टिकट भेजें।
वर्ष: २३ मई १९७१ अंक: ९
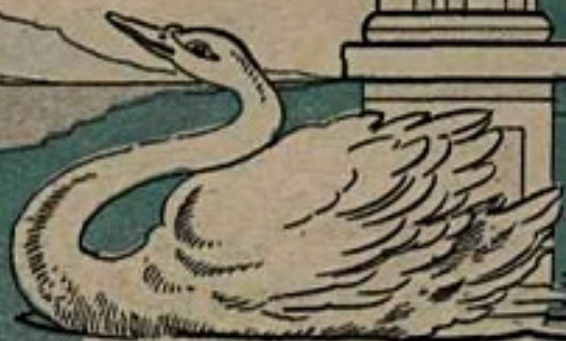
अमर वाणी

क्वचित् पृथ्वीशय्यः, क्वचि दपि च पर्यंक शयनः
क्वचित् शाकाहारः, क्वचि दपि च शाल्योदन रुचिः,
क्वचित् कंथाधारी, क्वचि दपि च दिव्यांबर धरः,
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखं ॥ १ ॥

[जो व्यक्ति कार्य साधना चाहता है, वह चाहे बिस्तर पर लेटे, तरकारी खाये, या बढ़िया चावल, चीथड़े पहने या रेशमी वस्त्र, इन सुख-दुखों की परवाह नहीं करता ।]

निंदंतु नीति निपुणा, यदि वास्तुवंतु,
लक्ष्मीः समाविशतु, गच्छतु वा यथेष्टं,
अद्वैव वा मरण मन्तु युगांतरे वा,
न्यायात् पथः प्रविचलंति पदं न धीराः ॥ २ ॥

[जो लोग नीति के ज्ञाता हैं, उन्हें कोई निंदा करे, या प्रशंसा, संपत्ति आवे या न आवे, मृत्यु चाहे इस क्षण में आवे या युगों के अंत तक न आवे, साहसी व्यक्ति न्याय मार्ग से एक क़दम भी नहीं हटते ।]

कदर्थित स्यापि हि धैर्यवृत्तेः न शक्यते धैर्यगुणः प्रमार्ष्टुं,
अधोमुख स्यापि कृतस्य वह्ने नाधः शिखा याति कदाचि देव ॥ ३ ॥

[चाहे किसी प्रकार की हीन स्थिति में आवे, साहसी अपने साहस को नहीं छोड़ता । जैसे अग्निज्वाला को औंधे मुँह भले ही बनावे, उसकी ज्वाला नीचे की ओर नहीं फैलती ।]

जान का ख़तरा

उद्भट देश में घोड़ों की चोरी बहुत होती थी। जो चोर पकड़े जाते, उन्हें कठिन दण्ड दिया जाता था।

एक रात को एक गरीब ज्योतिषी देशाटन करते एक गृहस्थ के घर आ पहुँचा। उस रात को उस गृहस्थ की घोड़ी बच्चा देनेवाली थी। इसलिए उस घर का मालिक और उसका बेटा रात-भर जागते रहें। ज्योतिषी को मालूम हुआ कि आधी रात के वक़्त घोड़ी बच्चा देनेवाली है, इसलिए वह जाग पड़ा, बाहर जाकर आसमान में नक्षत्रों की ओर देख बोला– "क्या इस घोड़ी को बच्चा देने से आध घड़ी नहीं रोकी जा सकती?"

"यह कैसे मुमकिन होगा?" गृहस्थ ने पूछा।

"बात यह है कि इस वक़्त घोड़ी जो बच्चा देनेवाली है, उसकी वजह से दो आदमियों की जान का खतरा है।" ज्योतिषी ने बताया। मगर उसी बुरे लग्न में घोड़ी ने बच्चा दिया।

"अब हमें क्या करना होगा?" गृहस्थ ने ज्योतिषी से पूछा।

"अब कर क्या सकते हैं? मैं एक तांबे के पत्र पर एक तंत्र कर देता हूँ। घोड़े के माथे पर का चमड़ा निकालकर उसके भीतर यह तंत्र रखो और फिर वह चमड़ा सी दो।" ज्योतिषी ने समझाया।

गृहस्थ ने वैसा ही किया। ज्योतिषी अपने रास्ते चला गया। घोड़े का बच्चा बच रहा। जब वह छे साल का हुआ, तब वह एक बढ़िया घोड़ा बना। एक दिन रात को चोरों ने उस घोड़े को चुराया। मालिक ने सुबह उठकर देखा तो घुड़साल में घोड़ा न था। वह यह भी सोच न पाया कि उस घोड़े को कौन चुरा ले गया

होगा! तब उसने अपने बेटे से कहा–"मैं घोड़े की खोज में जा रहा हूँ।"

"तुम अकेले मत जाओ, मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।" बेटे ने कहा।

"तुम भी किसलिए, न मालूम कहाँ-कहाँ भटकना होगा?" बाप ने कहा। मगर बेटे ने उसकी बात न मानी। बाप-बेटे घोड़े की खोज में चल पड़े।

वे दोनों कई गाँवों में गये। एक बार बरसात हुई तो दोनों भीग गये। सर्दी से दोनों काँपते एक गाँव में पहुँचे तो देखते क्या हैं, एक आदमी एक घोड़े पर सवार हो दूसरे घोड़े को हांकते जा रहा है।

बेटे ने अपने बाप से कहा–"बाबूजी, वह दूसरा घोड़ा हमारा है।"

"धत्, तुम कैसे बता सकते हो?" बाप ने कहा।

"हमारे घोड़े को मैं अच्छी तरह से पहचानता हूँ, पिताजी!" बेटे ने कहा।

बाप-बेटे बात कर ही रहे थे कि घोड़ों के साथ चलनेवाला व्यक्ति एक जगह ठहर गया और एक लुहार की दूकान में गया।

"हम भी वहाँ जाकर घोड़े को ठीक से देखेंगे।" बाप ने कहा। तब वे दोनों उस दूकान के पास गये।

लुहार ने दूसरे घोड़े को नाल ठोंकते सर उठाकर देखा और बोला–"तुम दोनों भीगे मालूम होते हो, अन्दर आकर भट्टी में आग सेंक लो।"

बाप-बेटे ने भट्टी के पास बैठकर घोड़े को ध्यान से देखा।

"हाँ बेटा, यह घोड़ा हमारा ही है।" बाप ने कहा।

"मैंने नहीं कहा, बाबूजी?" बेटे ने कहा। घुड़सवार ने उनकी बातचीत सुनकर पूछा–"क्या कहते हो?"

"यह घोड़ा हमारा है, इसे कोई चुरा लें गया है।" बाप ने कहा।

"मुझ पर चोरी का इलजाम लगाते हो, बड़ा बुरा होगा, समझें! यह घोड़ा

मेरे घर पैदा हुआ और वहीं बड़ा हुआ।" घुड़सवार ने कहा। बाप-बेटे ने न्यायाधीश के पास जाकर फ़रियाद की। न्यायाधीश के बुला भेजने पर घुड़सवार अपने साथ एक गवाह को लाया।

उन दोनों ने यही बताया कि वह घोड़ा उन्हीं के घर पैदा हुआ और आज तक उन्हीं के घर है। बाप-बेटे की तरफ़ से कोई गवाह न था।

"तुम दोनों ने झूठ बताकर दूसरों के घोड़े को हड़पने की कोशिश की, इसलिए तुमको फाँसी की सजा देता हूँ।" न्यायधीश ने बताया। बाप-बेटे को फाँसी पर लटकाने सिपाही गाँव के बाहर ले गये। फाँसी की तैयारी होने लगी।

"जब यह घोड़ा पैदा हुआ, तभी ज्योतिषी ने बताया था कि दो लोगों की जान का खतरा है।" बाप ने याद दिलाया।

"ज्योतिषी ने घोड़े के माथे में जो तंत्र रखा, वह भी अब काम न दे पाया।" बेटे ने दुख प्रकट किया।

"हाँ, अब भी वह तंत्र उसके माथे में होगा!" बाप ने कहा।

फाँसी की तैयारी हो गयी। न्यायाधीश अपनी आँखों के सामने अपराधियों को फाँसी पर लटकाने खुद आ पहुँचा।

"सरकार, उस घोड़े के माथे में चमड़े के नीचे तांबे का एक तंत्र रखा हुआ है। आप उसका चमड़ा निकलवाकर देख लीजिये। यदि वह तंत्र न हो तो हमको फाँसी पर लटकवा दीजिये।" बाप ने बिनती की।

सिपाहियों ने घोड़े के माथे पर का चमड़ा निकालकर देखा, भीतर तांबे का तंत्र दीख पड़ा।

न्यायाधीश ने बाप-बेटे को वह घोड़ा दिलाया और झूठी बात कहनेवाले उन दोनों को फाँसी के तख्ते पर लटकवाया।

ज्योतिषी की बात सच निकली और साथ ही उस तंत्र ने बाप-बेटे की जान बचायी।

विश्वासपात्र नौकर

एक गाँव में राम और सोम नामक दो मित्र थे। वे पड़ोसी थे और गरीब भी। वे छोटे-मोटे काम करके अपने पेट भरते थे। इसलिए वे दोनों ऐसी नौकरी की खोज करने लगे जिस से उन्हें एक दिन भी फ़ाका करना न पड़े।

पड़ोसी गाँव के ज़मीन्दार के घर में कोई न कोई नौकरी मिल जाय, इस आशा से वे दोनों घर से चल पड़े।

दोनों मित्र एक दिन तड़के उठकर जमीन्दार के घर पहुँचे। जमीन्दार के नौकर ने उससे बताया कि दो आदमी काम की खोज़ में आये हैं। ज़मीन्दार ने न उनको देखा और न भीतर ही बुलाया बल्कि अपने नौकर के जरिये खबर कर दी कि वे दोनों सोमवार सवेरे आकर मिले।

दोनों अपने पैर घसीटते लौट गये। "अरे जमीन्दार साहब को जो कुछ बात करनी थी, अभी करते। फिर सोमवार को क्यों बुलाते हैं?" सोम खीझकर बोला।

सोमवार सवेरे राम जाग पड़ा और सोम के घर पहुँचा। सोम अभी तक पैर पसारे सो रहा था। राम ने पूछा–"अरे भाई, चलो, जमीन्दार के घर चले।" सोम गुनगुनाते बोला–"जल्दी क्या है, थोड़ी देर बाद चलेंगे।"

"मैं जा रहा हूँ, चाहे तो तुम देरी से आ जाओ।" ये बातें कहकर राम चल पड़ा। क्योंकि उसने सोचा कि जमीन्दार ने जब सवेरे बुलाया, तब देरी करके जाना उचित न होगा।

राम के निकल जाने के एक घंटे बाद सोम जाग उठा, आराम से जमीन्दार के घर की ओर चल पड़ा। सोम यह समझ न पाया कि जमीन्दार आखिर काम देगा

लीला चटर्जी

कि नहीं, जाते ही दर्शन देंगे कि नहीं, ऐसी हालत में राम सवेरे ही उठकर क्यों चला गया? राम को देखते ही जमीन्दार के नौकर ने राम के आने की सूचना दी।

"यह पता लगाओ कि दूसरा आदमी क्यों नहीं आया?" जमीन्दार ने नौकर को आदेश दिया।

"थोड़ी देर बाद आनेवाला है।" राम ने नौकर को जवाब दिया।

"इंतज़ार करने को कह दो।" जमीन्दर ने अपने नौकर के द्वारा खबर कर दी।

थोड़ी देर बाद सोम ने प्रवेश करके कहा–"राम, मैंने नहीं कहा था? तुम पहले आये, मगर क्या पाया?"

और थोड़ी देर बाद जमीन्दार ने आकर कहा–"तुम्हीं दोनों काम की खोज में आये हो! आज चले जाओ, बुधवार सुबह मुझसे मिलो, समझें।" दोनों घर वापस लौटने लगे।

"ये जमीन्दार हम दोनों को नाहक़ तंग कर रहे हैं। बुधवार को भी हम से यही बात कहेंगे। उस दिन हमारा आना ही बेकार होगा।" सोम ने राम से कहा।

"अरे, भाई, हमें तो काम चाहिए। खाली बैठे हैं, चाहे जितनी बार भी क्यों न घूमे, हमारा नुक़सान ही क्या होगा?" राम ने जवाब दिया।

बुधवार के सुबह भी राम अकेले जमीन्दार के घर पहुँचा। सोम दुपहर के समय निकल पड़ा। जमीन्दार ने राम को दुपहर के समय देखा। उसने राम को खाना खिलाया और यह कहकर भेज दिया–"तुम कल शाम को मुझ से मिलो।"

राम जब घर वापस लौट रहा था, तब रास्ते में सोम दिखाई दिया। राम ने सोम से सारी बातें बतायीं।

"मैं पहले ही जानता था, भिखारी की तरह तुम्हें थोड़ा खाना खिलाकर लौटा दिया। इसी के लिए कल शाम को फिर जाना है?" सोम ने पूछा।

"अरे भाई, जाने में हमें एतराज ही क्या है? तुमको भी बुलाया है। हमें तो काम चाहिए, जब बुलावे, तब जाना चाहिए, नहीं तो कैसा?" राम ने समझाया।

"कल शाम को मैं आखिरी बार आऊंगा। फिर बुलावे तो मैं नहीं आऊँगा।" सोम ने कहा।

दूसरे दिन शाम को दोनों मिलकर जमीन्दार के घर पहुँचे। जमीन्दार के नौकर ने भीतर जाकर बात की और लौटकर बताया–"जमीन्दार साहब तुम्हारे काम के बारे में कल सुबह बात करेंगे, आज रात को तुम लोगों को यहीं रहने को कहा है।"

सोम नाराज हो गया और बोला– "अरे, अपने जमीन्दार का बड़प्पन रहने दो। तभी कह देते कि काम नहीं है।" ये शब्द कहते सोम चला गया।

जमीन्दार का नौकर अन्दर गया, थोड़ी देर बाद लौटकर बोला–"तुम यहीं रहते हो न? जमीन्दार ने रुपये दिये हैं, ये रुपये ले जाकर दूकान से एक दुपट्टा और एक दरी खरीद लाओ।" नौकर ने राम के हाथ पाँच रुपये दिये।

राम ने दूकान से एक दुपट्टा और एक दरी खरीदा और बचे हुए पैसे लाकर जमीन्दार के हाथ दिये। राम को मालूम हुआ कि जमीन्दार ने वे चीजें उसी के लिए खरीद लाने को बताया है। उस रात को जमीन्दार के घर खाना खाकर राम वहीं सो गया।

दूसरे दिन सुबह जमीन्दार ने राम से कहा–"तुम मेरे विश्वासपात्र नौकर हो! सोमवार से ही तुमको तनख्वाह मिलेगी। तुमको मासिक तीस रुपये वेतन दूंगा। तुम्हारा काम यही है कि हमारे गाँवों में जाकर कर वसूल करना होगा। यह काम तुमको बड़ी सन्नता के साथ करना होगा। तुम काम अच्छा करोगे तो धीरे धीरे तुम्हारा वेतन बढ़ाऊँगा।"

राम को अच्छा काम मिल गया, यह जानने पर सोम अपनी जल्दबाजी पर पछताने लगा।

शिलारथ

[७]

[खड्गवर्मा और जीवदत्त गाँव के मुखिये के बंधनों से छूटकर जंगल में भाग गये। उन्हें एक जगह भैरव भक्तों का दल दिखाई दिया। उनका नेता एक गाँव की कन्या को हर लाया था, इस पर वह और उसका प्रधान शिष्य झगड़ पड़े। खड्गवर्मा और जीवदत्त पेड़ पर बैठे यह सब देखने लगे। बाद......]

भैरव भक्तों में से कुछ लोगों ने चूल्हा जलाया और रसोई बनाने में लग गये। यह सब देखकर जीवदत्त बोला– "खड्गवर्मा, लगता है कि ये लोग अभी यहाँ से निकलनेवाले नहीं हैं। हमें भी तो खाने का कुछ प्रबंध करना चाहिये। चलो, कहीं पास में तालाब हो तो नहाकर जंगली फल लेते आवेंगे।"

इसके बाद वे दोनों चुपचाप पेड़ से उतर पड़े और तालाब की खोज में निकले। थोड़ी ही दूर पर उन्हें एक पहाड़ी झरना दिखाई पड़ा। वहाँ पर नहा-धोकर खाने भर के लिए पेड़ के फल तोड़ लिया, इतमीनान से फल खाकर फिर उसी पेड़ के पास लौट आये।

तब तक भैरवों का दल भी खाना समाप्त कर यात्रा की तैयारी करने लगा।

उन्हें लगा कि ये लोग भी पद्मपुर राज्य की सीमा के उस पार के पहाड़ों में जा रहे हैं। तब उन्हें बड़ा आनंद हुआ। उन दोनों ने सोचा कि उन्हें भी जहाँ तक हो सके, जल्द राज्य की सीमा को पार करना है।

दिन भर खड्गवर्मा और जीवदत्त भैरव भक्तों के पीछे जंगल में यात्रा करते रहें। दोनों ने यह निश्चय किया कि दिन के वक्त भैरवों के बड़े दल का सामना करके उस कन्या को मुक्त करने का प्रयत्न करना खतरे से खाली नहीं है। इसलिए अंधेरे में ही मौक़ा मिलने पर उनको चमका देना चाहिये।

सूर्यास्त के साथ क्रमशः जंगल में अंधेरा फैल गया। भैरवों के दल ने एक जगह छोटे-छोटे डेरे लगाये और रसोई बनने के बाद खाकर वे लोग सोने लगे। उनसे थोड़ी ही दूर पर पेड़ों पर बैठे खड्गवर्मा तथा जीवदत्त उचित समय की प्रतीक्षा करने लगे।

बड़ी रात गये भैरवों का गुरु अकेले ही चुपचाप अपने डेरे से बाहर आया, एक दूसरे डेरे पर पहरा देनेवाले को धीरे से बुलाकर उसे उसी पेड़ के नीचे लाया, जिस पर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त बैठे हुए थे।

खड्गवर्मा और जीवदत्त को गणलिंगेश्वर की बातें साफ़ सुनाई देने लगीं। वह पहरेदार से कह रहा था—"भैरवी कन्या बननेवाली युवती जिस डेरे में सो रही है, वह डेरा उस सालवृक्ष के नीचे है न? उस डेरे के पीछे की झाड़ियों में एक बाघ घूम रहा है। शायद वह उस कन्या को उठा ले जाने के वास्ते डेरे में घुस सकता है। पर तुम लोग उसे रोकने या बचाने की कोशिश न करो। हम देखना चाहते हैं कि कन्या भैरवी की हिम्मत कैसी है?"

थोड़ी देर बाद वे दोनों वहाँ से अपने अपने डेरों की ओर चले गये तब जीवदत्त ने कहा—"सुनते हो न खड्गवर्मा? भैरवों का गुरु उस कन्या को बाघ का शिकार बना

देना चाहता है। मगर इसका कारण समझ में नहीं आता!"

"कारण समझने की कोशिश करने के पहले शायद वह बाघ उस कन्या को ही उठा ले जाय! यह बात हम इतमीनान से फिर सोचेंगे। तुम मेरे लौटने तक यहीं रहो।" ये शब्द कहकर खड्गवर्मा ने पेड़ की डाल को पकड़ लिया, झूलते हुए उस कन्यावाले डेरे के निकट पहुँचा।

भैरवों के गुरु के कहे मुताबिक़ एक बाघ डेरे के पास की झाड़ियों में घूमते डेरे की ओर ताक रहा था।

"ओह, हालत बड़ी नाज़ुक हो गयी है।" खड्गवर्मा ने मन में सोचा। वह पहले बाघ पर हमला करके उसे मार डालना चाहता था। मगर इस शोरगुल की वजह से भैरव सब जाग सकते हैं जिससे उसके प्राण खतरे में पड़ जायेंगे। ऐसा न होकर कन्या को बाहर लाया जाय तो एक ओर से बाघ और दूसरी ओर से पहरेदार उस पर हमला कर सकते हैं।

ये ही बातें सोचते खड्गवर्मा यह देखने के लिए लुक-छिपकर बाहर आया कि पहरेदार क्या कर रहा है। पर पहरेदार अपने गुरु की सलाह पाकर एक दूसरे डेरे के पास गया और सूखी लकड़ियाँ जलाने लगा। उसका ख्याल था कि चाहे भैरवी

कन्या का कुछ हो जाय, उसे कोई चिंता नहीं, मगर बाघ उस पर हमला न कर बैठे। बस, वह केवल अपने को बचाने की फ़िक्र में था।

पहरेदार की यह करनी खड्गवर्मा के लिए बड़ा अनुकूल साबित हुआ। अब उसे इस बात का डर न रहा कि पहरेदार उसे देखकर चिल्ला उठेगा या उस पर हमला कर बैठेगा। वह चुपचाप पीछे की ओर से भैरवी कन्यावाले डेरे में पहुँचा। भालू के चमड़े पर बैठी वह कन्या खड्गवर्मा को देखते ही डरके मारे काँप उठी। मगर उसने चिल्लाने की कोशिश न की।

खड्गवर्मा धीरे से उस कन्या के पास पहुँचकर स्नेह भरे स्वर में बोला–"बहन, मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो? मैं उसी गाँव से आ रहा हूँ जिस गाँव का तुम्हारे पिता मुखिया है। तुमको ये भैरव लोग तालाब के यहाँ से भगा ले आये हैं न?"

"जी हाँ! मगर मैंने आपको कभी अपने गाँव में नहीं देखा!" भैरवी कन्या ने पूछा।

"मैंने यही कहा कि तुम्हारे गाँव से आ रहा हूँ। पर यह नहीं कहा कि मैं तुम्हारे गाँव का निवासी हूँ। लेकिन यह कोई खास बात नहीं कि मैं कौन हूँ और कहाँ से आया हूँ। मगर साफ़ साफ़ यह बताओ कि तुम फिर अपने माता-पिता के पास जाना चाहती हो या इन भैरवों की पुजारिनी बनकर यश पाने के साथ इन पर अधिकार चलाना चाहती हो?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"छी छी:, ये भैरव कहीं आदमी हैं, जानवर हैं, जानवर! उनमें सिर्फ़ श्वेतभैरव आदमियों की गिनती में आता है। यदि आप से बन पड़ा तो आप मेरी रक्षा करके मुझे अपने माता-पिता के पास पहुँचा दीजिये।" भैरवी कन्या ने निवेदन किया।

"तुम डरो मत, तुमको ज़रूर तुम्हारे माँ-बाप के पास पहुँचा देंगे। उधर झाड़ियों में एक बाघ घूम रहा है। ज्योंही हम डेरे से बाहर निकलेंगे त्योंही वह हम पर झपट सकता है। इसलिए तुम चुप रह जाओ, मैं उस बाघ की बात देख लूंगा। डर के मारे चिल्ला पड़ोगी तो भैरव भक्त जाग पड़ेंगे और तुरंत हम दोनों को बन्दी बनायेंगे।" खड्गवर्मा ने समझाया।

दोनों दबे पाँव डेरे के पीछे से बाहर आये, तब तक झाड़ियों में गुर्रानेवाला बाघ उन्हें देखते ही बाहर आया और उनके सामने पिछली टांगों पर बैठ गया। खड्गवर्मा ने सोचा कि आगे बढ़कर बाघ पर तलवार चलाये! मगर उसे शंका हुई

CHITRA

कि उस वक़्त जो शोरगुल मचेगा, उसकी वजह् से भैरव भक्त जाग जायेंगे ।

बाघ को निकट देख भैरवी कन्या थर-थर काँपने लगी । खड्गवर्मा उस कन्या के आगे खड़े हो एक-एक क़दम पीछे हटने लगा । उसका ख़्याल था कि इसी प्रकार जीवदत्त जिस पेड़ पर बैठा है, वहाँ तक चला जाय और उस कन्या को उस पेड़ पर चढ़ा दिया जाय ।

लेकिन बाघ भी धीरे धीरे क़दम बढ़ाते उनके पीछे चलने लगा । खड्गवर्मा ख़ूंख्वार जानवरों का स्वभाव जानता था, वह् किसी भी क्षण उनपर हमला कर सकता है, यह सोचकर उसने तलवार तैयार रखी । उसकी कल्पना के अनुसार बाघ ज़ोर से गरज उठा और खड्गवर्मा पर उछल पड़ा । खड्गवर्मा ने निशाना देखकर बाघ के सर पर तलवार का प्रहार किया ।

तलवार की चोट खाकर बाघ भयंकर रूप से गरज उठा, फिर पीछे की ओर लुढ़क पड़ा । तब लोटते-लोटते वह् झाड़ियों में गिर पड़ा । भैरवों के डेरों में तभी कोलाहल मचा । भैरवों का गुरु गणलिंगेश्वर एक डेरे से बाहर निकला और ज़ोर से चिल्ला पड़ा—"वाह्, भैरवी कन्या बिना हथियार के बाघ से लड़ रही है । तुम में से कोई भी उसे रोकने की चेष्टा मत करो । केवल तमाशा देखते रहो ! वह् अभी बाघ का पेट चीरकर उसकी आंतड़ियों को गले में डाले हमारे पास आ जायगी ।"

सभी भैरव भक्त अपने गुरु के चारों तरफ़ फैल गये और झाड़ियों की ओर ताकने लगे । इस बीच खड्गवर्मा भैरवी कन्या को साथ ले जीवदत्तवाले पेड़ के पास पहुँचा । जीवदत्त पेड़ से उतर पड़ा । उन लोगों ने सोचा कि भैरवों की आँखों में धूल झोंककर भाग जाने का यही अच्छा मौक़ा है । वे वहाँ से निकल पड़े और जंगलों में ओझल हो गये ।

गणलिंगेश्वर ने सोचा कि भैरवी कन्या बाघ का शिकार हो चुकी है। उसने सोचा कि वह कन्या श्वेतभैरव के प्रति ज्यादा श्रद्धा का भाव रखती है, ऐसी कन्या को पुजारिनी बनाया जाय तो भविष्य में उसी के लिए खतरा है। इसलिए उसे बाघ का शिकार बनाने का पहले ही निश्चय कर लिया था। मगर प्रकट रूप में वह यह अभिनय करने लगा कि वह उस कन्या की हिम्मत की परीक्षा लेना चाहता है।

श्वेतभैरव को संदेह था कि उसका गुरु कोई षड़यंत्र रच रहा है। वह जल्दी उस कन्या के डेरे के पास पहुँचा और भीतर झाँककर देखा। वहाँ पर कोई न था। तब उसे अपने गुरु की बातों का कपट मालूम हो गया। अपने गुरु के पास लौटकर बोला—"गुरु गणलिंगेश्वर! भैरवी कन्या डेरे में नहीं है। वह कहाँ गयी? जल्दी बता दो।"

गणलिंगेश्वर ने उसकी ओर आश्चर्य के साथ देखते हुए कहा—"तुम किस लोक में हो? मैं यही तो कह रहा था! तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हुआ? भैरवी कन्या अकेली उन झाड़ियों में बाघ से लड़ रही है।"

"वह कन्या साहसी मालूम होती है। लेकिन मैं नहीं समझता कि वह बाघ के साथ लड़ने की ताक़त रखती है!" श्वेतभैरव ने क्रोध से कहा।

"जिस में ताक़त नहीं है, वह भैरव-पूजा के लायक़ नहीं। ऐसी कमजोर कन्या को भले ही बाघ खा जाय तो हमारा कुछ नुक़सान न होगा! हम लोग फिर से गाँवों में जाकर एक और योग्य कन्या को पकड़ लायेंगे।" गणलिंगेश्वर ने कहा।

ये बातें सुनने पर श्वेतभैरव को बड़ा क्रोध आया, मगर अपने क्रोध को दबाते हुए झाड़ियों की ओर देखकर बोला—"कहीं पत्तों के हिलने तक की आवाज़ नहीं होती। अब बाघ भी नहीं गरजता।

इसलिए हमें यह देखना होगा कि किसको किसने मारा!" इन शब्दों के साथ हाथ में मशाल ले श्वेतभैरव निकल पड़ा। उसके पीछे कुछ भैरव हो लिये।

सब ने झाड़ियों के पास जाकर पत्थर फेंके, ताकि कहीं बाघ ताक में बैठा हो तो बाहर निकल आय, मगर कहीं से कोई आहट न हुई। उन लोगों ने अनुमान लगया कि बाघ ने कन्या को मारा होगा, या दोनों मर गये होंगे। वे झाड़ियों की ओर आगे बढ़े।

वहाँ पर न बाघ था और न कन्या ही। झाड़ी कुचली हुई लगती थी। मशाल की रोशनी में पत्तों तथा टहनियों पर खून की बूंदें चमक रही थीं। श्वेतभेरव ने सोचा कि बाघ कन्या को मुंह में दबाये चला गया होगा। तब अपने अनुचरों से बोला–"यह सब हमारे गुरु की करतूत है। वह एक अबोध कन्या की मौत का कारण बना। इसे हम कैसे सहन कर सकते हैं?"

गणलिंगेश्वर दूर पर खड़े हो यह सब देख रहा था। उसने सोचा कि बाघ अचानक झाड़ियों से श्वेतभैरव पर हमला कर बैठेगा। मगर वहाँ पर शांति देख चकित हुआ तब निकट जाकर बोला–"श्वेतभैरव, क्या बाघ और कन्या दोनों मर गये?"

"यहाँ पर किसी की भी लाश दिखाई नहीं देती है। केवल खून दिखाई दे रहा है, बाघ को कन्या या कन्या को बाघ उठा ले गया होगा।" श्वेतभैरव ने व्यंगपूर्ण शब्दों में जवाब दिया।

"महाभैरव ने हमारी रक्षा करके अपनी भी रक्षा कर ली है। निर्बल कन्या को अपनी पुजारिनी होते महाभैरव पहले ही संभल गया। अब तुम सब डेरे उठाकर यात्रा के लिए तैयार हो जाओ। इस बार हम किसी योग्य कन्या को देख पकड़ लायेंगे।" गणलिंगेश्वर ने कहा।

(और है)

मृत्यु देवता

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन्, तुम्हारी हिम्मत प्रशंसनीय है, पर याद रखो कि मौत के साथ खिलवाड़ करना खतरे से खाली नहीं। ऐसा काम करके अनेक कठिनाइयों में फँसी हुई मृदुला की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: दूर देश के किसी गाँव में एक धनी परिवार में एक लड़की पैदा हुई। उसका नाम मृदुला रखा गया। बचपन में ही वह बड़ी सुंदर थी। मगर युक्त वयस्का होने पर उसका सौंदर्य खिल उठा। हर रोज़ उसे देखने वाले भी उसके सौंदर्य पर चकित हो जाते थे।

बेताल कथाएँ

सब लोगों के द्वारा उसकी सुंदरता की तारीफ़ होते देख मृदुला का घमण्ड बढ़ गया। इसलिए वह अच्छे व सुंदर युवकों की बिलकुल परवाह न करती थी। उसके माता-पिता ने कई संबंध देखें, मगर मृदुला ने उन सबको इनकार किया। पहले जैसे उसके सौंदर्य की तारीफ़ फैल गयी, अब उसके घमण्ड की खबर भी चारों ओर फैल गयी। अब कोई युवक मृदुला के साथ शादी करने को आगे न आता था, बल्कि उसका मज़ाक उड़ाना भी प्रारंभ हो गया।

इसलिए मृदुला अपने घर से बाहर बिलकुल क़दम न रखती थी। वह एकांत में रहना पसंद करती थी।

मृदुला के माता-पिता को इस बात का दुख सताने लगा कि धनी परिवार में पैदा होकर सुंदर होने पर भी उसकी कन्या की शादी नहीं हो रही है। एक दिन मृदुला की माँ ने उससे कहा—"अब कोई भी तुम्हारे साथ शादी करने को न आवेगा।" तुमने ख़ुद अपनी हानि आप कर डाली।

"कोई न आवे तो क्या मृत्यु देवता भी न आवेगा?" मृदुला ने अपनी माँ से कहा।

उस रात को मृदुला को नींद नहीं आयी। वह चारपाई पर लेटे करवटें बदल रही थी। तभी किसीने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा—"मृदुला, मैं तुम्हारे साथ शादी करने आया हूँ।"

मृदुला चौंककर उठ बैठी। उसे गोरे रंग का एक सुंदर युवक हँसते हुए दिखाई दिया।

मुदुला को आश्चर्य हुआ। वह युवक कौन है? भीतर कैसे आया है? उसका नाम उसको कैसे मालूम हुआ? उसे जब यह संदेह हुआ कि शायद वह मृत्यु देवता है, तब मृदुला का कलेजा कांप उठा। सारे शरीर में पसीना छूटने लगा। इस भय के कारण वह उस युवक से यह पूछ न पायी कि तुम कौन हो।

. युवक ने थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें कहीं, तब 'फिर मिलूंगा।' कहकर चला गया। मृदुला यह जानना चाहती थी कि वह जायगा कहाँ? इसलिए वह उसके पीछे चल पड़ी। वह युवक गली में थोड़ी दूर चला तब एक घर के अन्दर चला गया। थोड़ी देर बाद वह बाहर आया। मगर दूसरे ही क्षण उस घर से रोने की आवाज़ सुनाई दी।

मृदुला ने यह निश्चय कर लिया कि वह कोई और नहीं, बल्कि मृत्यु देवता ही है। तब वह अपने घर लौट आयी। उसने सोचा—भूल से उसने मृत्यु देवता को वर लिया है। इसलिए किसी भी क्षण मृत्यु देवता उसे अपनी पत्नी बना सकता है। यह बात माता-पिता को सुनाने पर भी कोई फ़ायदा न होगा। उस पर जो बीतनेवाला है, उसे कोई बदल नहीं सकता है। इसलिए उसने इस रहस्य को गुप्त रखना चाहा।

एक हफ़्ता बीत गया। अर्ध रात्रि के समय उसके कमरे के बाहर खिड़की के पास खड़े हो किसीने उसे पुकारा। मृदुला ने बाहर जाकर खिड़की के पास देखा। वही युवक बाहर खड़ा था। उसने मृदुला से पूछा—"तुमने मेरे पीछे आकर उस रात को क्या देखा?"

"मैंने तो कुछ नहीं देखा?" मृदुला ने जवाब दिया।

"सच न बताओगी तो एक हफ़्ते में तुम्हारा पिता मर जायगा।" युवक ने कहा।

"मैंने कुछ नहीं देखा।" मृदुला ने फिर वही उत्तर दिया।

वह युवक चला गया। पर ठीक एक हफ़्ते के अन्दर मृदुला का पिता मर गया। वही उसके पिता की मौत का कारण बनी। यह सोचकर मृदुला फूट-फूटकर रोयी।

फिर एक दिन वह युवक खिड़की के पास आया। मृदुला को पुकार कर पूछा—"उस दिन तुमने मेरे पीछे आकर क्या देखा? सच बताओ, वरना तुम्हारी माता मर जायगी।"

मृदुला यह प्रकट करना नहीं चाहती थी कि वह मृत्यु देवता है और वह यह बात जानती है। इसलिए यही जवाब दिया—"मैंने कुछ नहीं देखा।"

एक हफ़्ते के अन्दर मृदुला की माँ मर गयी। मृदुला के दुख की सीमा न थी। वह दुख में डूबी हुई थी कि एक दिन अर्ध रात्रि के समय उस युवक ने खिड़की के पास आकर फिर मृदुला से यही सवाल किया—"अब भी सही, झूठ न बोलो, सच बताओ, वरना तुम भी मर जाओगी।"

मृदुला ने कोई जवाब नहीं दिया। युवक ने वही सवाल दो बार पूछा, जवाब के न मिलने पर वह चला गया।

दूसरे दिन मृदुला मर गयी। श्मशान में मृदुला के शव की समाधि की गयी। कुछ दिन बाद उस समाधि पर विभिन्न रंगों का एक गेंदा खिल उठा।

एक राजकुमार अपने दल-बल के साथ उसी ओर से आ निकला। उसने उस गेंदे के फूल को देख मुग्ध होकर उसे तोड़ डाला। राजकुमार के सिपाहियों ने बताया कि समाधि पर के फूल को तोड़ना उचित नहीं है, पर राजकुमार ने उनकी बात न मानी।

राजकुमार उस फूल को अपने सोने के कमरे में रख कर बाहर चला गया। उस रात को जब वह सोने लगा तब उसने

अपने दूध का गिलास हाथ में लिया, पर वह खाली था। राजकुमार ने रसोइये को बुलाकर पूछा तो उसने बताया कि गिलास में दूध भरकर रख दिया है। गिलास में थोड़ा दूध बच रहा था, इसलिए यह स्पष्ट हो गया कि किसी ने दूध पी लिया है। राजकुमार ने सोचा कि राजमहल के किसी व्यक्ति ने दूध पी लिया होगा। पर चोर पकड़ा न गया।

दो दिन बराबर कोई राजकुमार के दूध को पीता गया। वही रसोई में भी पहुँच कर सारा खाना खा जाता था।

तीसरे दिन राजकुमार ने थोड़ी देर पहले ही अपने कमरे में जाकर दूध मंगवाया। मगर उसने दूध न पिया, बल्कि मेज़ पर रख कर वह सोने का अभिनय करने लगा। थोड़ी बाद साड़ी के फड़फड़ाने की आवाज़ सुनाई दी। राजकुमार ने तुरंत अपनी आँखें खोल कर देखा। जहाँ पहले गेंदे का फूल था, वहाँ से कोई सुंदरी निकली और दूध पीने लगी। वह खाली गिलास को मेज़ पर रख कर रसोई की ओर जाने लगी। तभी राजकुमार ने उठकर उसका हाथ पकड़ लिया।

"तुम कौन हो? गेंदे के रूप में कैसे बदल गयी हो?" राजकुमार ने पूछा। तब मृदुला ने अपनी सारी कहानी सुनायी।

"मृत्यु देवता के साथ तुम्हारा विवाह नहीं हुआ है न? मैं ही तुम्हारे साथ

विवाह करूँगा।" राजकुमार ने मृदुला से पूछा।

दूसरे दिन मृदुला के सौंदर्य को देख राजकुमार के रिश्तेदार बहुत ही प्रसन्न हुए। उनका विवाह वैभव के साथ संपन्न हुआ। उनके कई बच्चे भी हुए। अब मृदुला राजकुमार के साथ सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगी।

बेताल ने यह कहानी सुना कर कहा— "राजन, मृदुला को इतने कष्ट देने के बाद मृत्यु देवता ने उसे योग्य पति को दिखाया और उसको सुखपूर्वक जीने क्यों दिया? इस सवाल का जवाब जानते हुए भी तुम न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने उत्तर दिया—"हम यह नहीं कह सकते कि मृत्यु देवता मृदुला से वैर भाव रखता है। उसने मृदुला का बड़ा उपकार ही किया है। मृदुला के अहंकार को दूर किया। हम आसानी से समझ सकते हैं कि मृदुला ने अपने माता-पिता की मृत्यु से कैसे पश्चात्ताप किया। उसने यह भी सत्य साबित किया कि उसके वास्ते मृत्यु देवता आवेगा। उसी प्रकार मृत्यु देवता मृदुला को ले गया। मगर जिसकी आयु पूरी न हुई हो, उसे मृत्यु देवता भी मार नहीं सकता। मृदुला के माता-पिता की आयु समाप्त होने के कारण ही वे मर गये हैं। मगर उसमें पश्चात्ताप पैदा करने के ख्याल से तथा उसे दण्ड देने के विचार से ही उन्हें मार डालने का संकल्प मृत्यु देवता ने प्रकट किया। अकेली मृदुला की ही अकाल मृत्यु हुई थी। इसीलिए मृत्यु देवता ने उसे फिर जिलाने तथा उसे योग्य पति को दिखाने के लिए ही यह सारा प्रबंध किया है। विवाह करके मृदुला के सुखी बनने का कारण मृत्यु देवता ही है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

एक से एक बढ़कर है

एक देश में चोरियाँ ज्यादा होती थीं। इसलिए उस देश का राजा जो भी चोर पकड़ा जाता, उसे फांसी की सजा दे देता था। इस तरह कई लोगों को लगातार फांसी पर चढ़ाने के बाद उस देश में चोरियों की संख्या घट गयी।

उसी देश के एक गाँव में भोला और गिरिधर नामक दो चोर थे। उन दोनों ने आपस में यह निश्चय कर लिया—"अब हम को चोरियाँ नहीं करनी है। कोई दूसरा पेशा अपनायेंगे। दिल लगा कर कोई काम करना चाहे, तो पेशों की क्या कमी है।"

यह नि ांय करके वे दोनों पड़ोसी गाँव में पहुँचे और उस गाँव के एक अमीर किसान के घर काम पर लग गये। भोला का काम था, रोज बैलों को चारागाह में ले जाकर चराना और गिरिधर का काम था—बगीचे को पानी सींचना। मालिक ने उन पर यह बंधन न रखा कि दोनों को अपना अपना काम ही करना है। चाहे जो भी करे, पर दोनों काम पूरे करने हैं।

पहला दिन भोला बैलों को चारागाह में हांक ले गया। बैलों ने उसे कई तरह से सताया, आपस में लड़े भी, भाग खड़े हुए, खेतों में जाकर चरने भी लगे। उनको क़ाबू में रखना उसे बड़ा मुश्किल हो गया। वह दिन भर परेशान रहा।

इस बीच गिरिधर पानी भरकर बाग को सींचने लगा। कई बाल्टी भरने पर भी पेड़ों के लिए पानी पार्याप्त न हुआ। आधे बाग को सींचते-सींचते उसके हाथ दुखने लगे। उसकी कमर टूट-सी गयी फिर भी वह आराम नहीं करता था, इसलिए उसे अपना काम पूरा करते-करते शाम हो गयी।

सुरेश कुमार

उस रात को भोला और गिरिधर ने एक दूसरे के काम की पूछ-ताछ की।

"मुझे अपना काम ऐसा आराम मालूम हुआ कि कह नहीं सकता। बैलों को चारागाह में हांक दिया, और मैं आराम से पेड़ की छाया में सो गया। शाम के होते-होते सारे बैल मेरे पास आ गये। तब उनकी आहट पाकर मेरी नींद खुल गयी। तब मैं उनको हांकते घर पहुँचा।" भोले ने समझाया।

"मेरा काम भी बड़ा आसान था। चन्द मिनटों में दस बाल्टियाँ पानी भरकर सारे बाग को सींच दिया। आराम से खाट लगा कर सो गया।" गिरिधर ने कहा।

"बहुत अच्छा! कल तुम बैलों को चरा लाओ, मैं बगीचे को सींच दूंगा। हम दोनों अपना अपना काम जब-तब बदलते जायेंगे, जिससे हमारा उत्साह भी बना रहेगा। समझें।" भोला ने कहा।

गिरिधर ने खुशी के साथ उसकी बात मानते हुए कहा-"मैं भी तो यही सोच रहा था।"

दूसरे रिन वे दोनों काम बदल कर चले और शाम तक एक दूसरे के धोखे को समझ गये।

मगर भोला ने बगीचे को पानी देते समय एक बात जान ली। एक आम की जड़ में कई बाल्टियों का पानी भरने
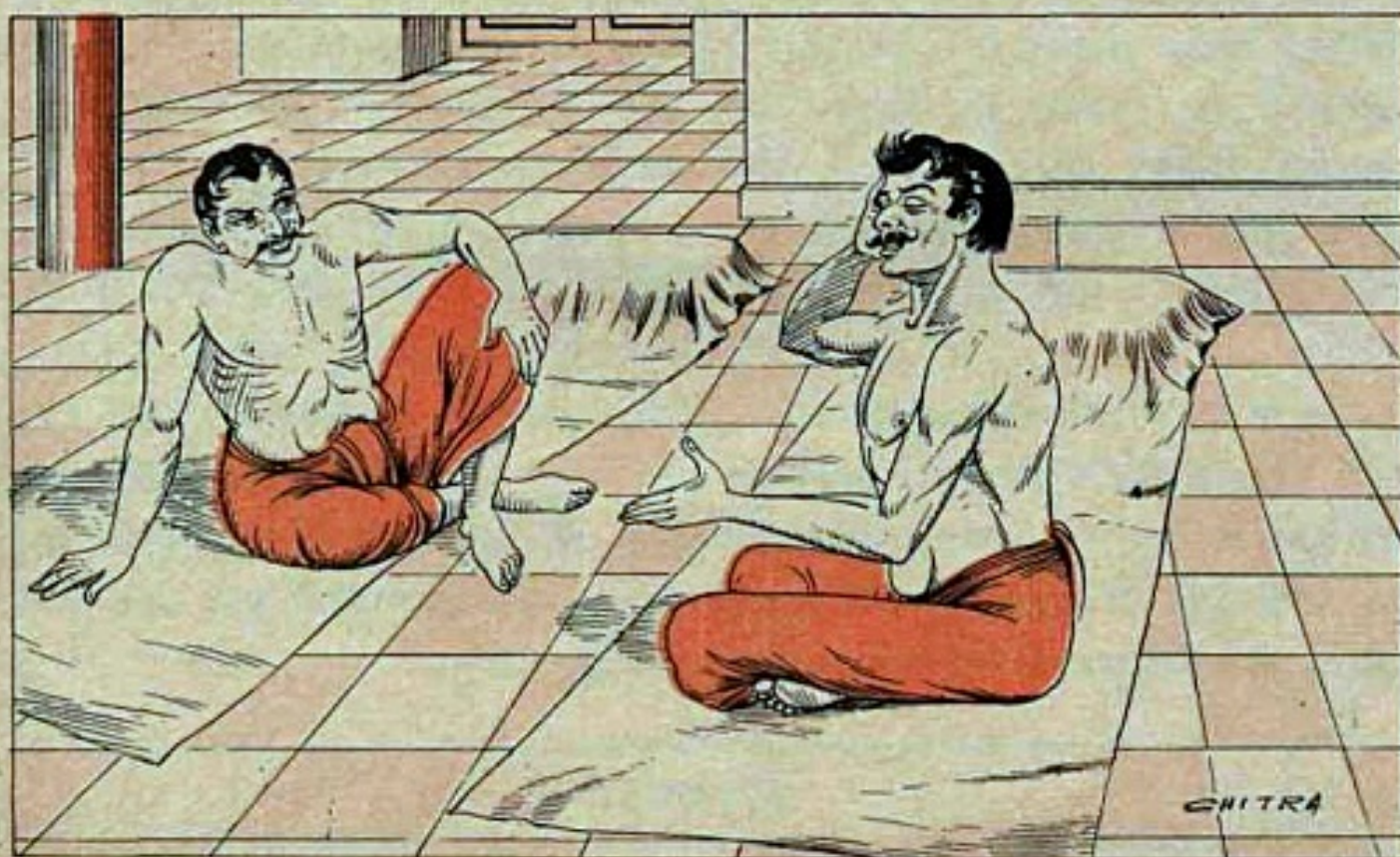
पर भी सूखता जा रहा था। इस रहस्य का पता रात को लगाने का गिरिधर ने निश्चय किया।

उस रात को जब दोनों लेटे, तब अपने-अपने कामों के बारे में चर्चा नहीं की। दोनों सो जाने का अभिनय करने लगे। आधी रात के समय भोला उठ खड़ा हुआ, कुदाल लेकर आम के पेड़ के पास गया और खोदने लगा।

थोड़ी देर बाद कुदाल से कोई चीज़ टकरा गयी और झन् की आवाज़ हुई। तुरंत भोला ने चारों ओर चौंककर देखा। गिरिधर अंधेरे में उसके पीछे खड़ा था। उसने पूछा—"यह तुम क्या खोद रहे हो?"

"कुछ नहीं। इस पेड़ का आवाल ठीक न था। नींद न आयी तो आवाल ठीक कर रहा हूँ।

"अरे, झनझनाहट हुई, क्या है?" गिरिधर ने फिर पूछा।

"कोई पत्थर होगा। चलो, सो जायेंगे।" ये बातें कहते भोला कुदाल लेकर चल पड़ा। गिरिधर मन ही मन हँस पड़ा।

दोनों जाकर लेट गये। गिरिधर के सो जाने के बाद भोला फिर आकर उसे खोदकर देखना चाहता था। मगर उसकी आँख झपक गयी और वही पहले सो गया।

भोला को खुर्राटे लेते देख गिरिधर उठ बैठा। कुदाल लेकर आम के पास गया।

आवाल खोदने पर उसे अशर्फ़ियों की हाँड़ी मिली। उसे कहीं छिपाना था। देखा, पास में एक तालाब है। भोला उस हाँड़ी को लेकर तालाब के पास गया, जहाँ गहराई न थी, उस जगह कीचड़ में हाँड़ी गाड़ दी। फिर चुपचाप लौटकर आराम से सो गया।

गिरिधर मुँह अंधेरे उठा। कुदाल लेकर आम के पेड़ के पास गया। पर उसे अशर्फ़ियों की हाँड़ी दिखाई न दी। वह एक दम दंग रह गया, मगर लौटकर देखा तो भोला के पैरों पर कीचड़ और सिवार लगे थे। गिरिधर भांप गया कि भोला ने अशर्फ़ियाँ हड़प कर तालाब में छिपा रखा है। उसने तालाब के पास जाकर देखा। तालाब में एक जगह मेंढ़कों की टर टर न चलती थी। वहीं पर ढूंढकर गिरिधर ने अशर्फ़ियों की हाँड़ी निकाली, कंधे पर रखकर सीधे अपने गाँव की ओर चल पड़ा।

गिरिधर के जागने के थोड़ी देर बाद भोला भी जाग पड़ा। पर गिरिधर दिखाई न दिया। तालाब के पास जाकर ढूंढा तो अशर्फ़ियों की हाँड़ी न थी। उसने अनुमान लगाया कि गिरिधर हाँड़ी लेकर अपने गाँव को चला गया होगा। भोला भी उसी रास्ते चल पड़ा।

थोड़ी दूर जाने के बाद हाँड़ी के बोझ को लिये धीरे से चलनेवाला गिरिधर भोला को दिखाई पड़ा। भोला नज़दीक के रास्ते खेतों से होकर आगे गया, एक जगह उसने रास्ते में अपना एक चप्पल छोड़ दिया, फिर सौ गज़ की दूरी पर दूसरा चप्पल भी छोड़ा और वह एक पेड़ पर चढ़कर पत्तों के बीच छिप गया।

थोड़ी देर बाद हाँड़ी के बोझ से पैर घसीटते गिरिधर आ निकला। उसने एक चप्पल को देखा, पर परवाह न की, फिर सौ गज जाने पर उसे दूसरा चप्पल भी दिखाई दिया। तब उसका लोभ जाग उठा। गिरिधर ने इधर-उधर देखा तो कोई दिखाई न दिया। तब हाँड़ी को

वहीं उतार कर पहले चप्पल की खोज में चला गया।

झट भोला पेड़ से उतर पड़ा। हाँड़ी उठाकर जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाते अपने घर जा पहुँचा।

गिरिधर दोनों चप्पल पाकर लौट आया। पर देखता क्या है, वहाँ पर अशर्फ़ियों की हाँड़ी नहीं है। उसने सोचा कि भोला ने ही हाँड़ी हड़प ली है। यह सोचकर वह जल्दी-जल्दी भोला के घर पहुँचा।

गिरिधर के भोला के घर पहुँचने पर उसे भीतर से रोने-धोने की आवाज़ सुनाई दी। गिरिधर ने आश्चर्य में आकर पूछा—"क्या हो गया है?"

भोला की औरत और बेटे ने बताया कि भोला मर गया है। एक वस्त्र लपेट कर भोला का शव लिटाया गया था। गिरिधर भी उनके स्वर में स्वर मिलाकर थोड़ी देर तक रोता रहा, तब बोला—"हम दोनों गहरे दोस्त थे। मैं उसकी आख़िरी इच्छा को पूरा करने के सिवाय अब क्या कर सकता हूँ? उसने मुझे बताया था कि यदि वह मुझसे पहले मर जायगा तो मैं उसके शव को कांटों पर घसीट दूं। मैं उसकी इच्छा की पूर्ति करके मित्रता का ऋण चुकाऊँगा।"

ये शब्द कहकर गिरिधर ने अचानक भोला के शव को उठाया, सब के रोकते रहने पर भी उसने ध्यान नहीं दिया। गाँव के बाहर जहाँ कांटों की झाड़ियाँ थीं, वहाँ पहुँचा। कांटों की याद आते ही भोला का शरीर कांप उठा।

वह झट गिरिधर के कंधों से खिसक पड़ा और बोला—"अरे गिरिधर, हम दोनों आपस में झगड़ा ही क्यों करें? इन अशर्फ़ियों को बराबर बांटकर आराम से अपने दिन बितायेंगे। हमने चोरी करना तो बंद किया, पर चोरी करने की इच्छा को भी अब छोड़ देंगे।"

दोनों में इस प्रकार समझौता हुआ। अशर्फ़ियों की कृपा से दोनों आराम से ज़िंदगी काटने लगे।

बेकार

एक जमीन्दार था। वह बड़ा धर्मात्मा और उदार स्वभाव का था। इसलिए गरीबों की यथाशक्ति मदद करता था।

एक दिन एक युवक जमीन्दार के पास गया और बिनती की—"सरकार, मैं बड़ी तक़लीफ़ों में फँसा हूँ। मुझे अपनी माँ और बहन को भी पालना है। कहीं काम नहीं मिला, आप कोई काम देकर मेरी रक्षा कीजिये।"

जमीन्दार को उस युवक पर दया आयी, उसने कहा—"मेरे यहाँ कोई ऐसा काम नहीं है, जो तुम कर सको। कहीं काम ढूँढ़ लो। पर काम के मिलने तक मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" इन शब्दों के साथ जमीन्दार ने युवक को दो रुपये दिये।

उस दिन से लेकर वह युवक रोज शाम को जमीन्दार के पास आता, दो रुपये लेकर चला जाता। इसके बाद दस दिन तक वह युवक जमीन्दार के घर न आया। जमीन्दार ने सोचा कि शायद उस युवक को कोई काम मिल गया है।

लेकिन वह ग्यारहवें दिन जमीन्दार के घर आया। जमीन्दार के यह पूछने पर कि क्या कहीं काम मिल गया है? युवक ने जवाब दिया—"नहीं जी, कोई काम नहीं दे रहे हैं, आपकी मदद पर ही हम निर्भर हैं।"

जमीन्दार ने युवक के हाथ में दो रुपये दिये।

"पिछले दस दिनों के रुपये भी दिलाइये।" युवक ने पूछा।

"तुम आये क्यों नहीं?" जमीन्दार ने पूछा।

"रोज एक मील चलकर आना कठिन है न जी!" युवक ने जवाब दिया।

"रुपयों के वास्ते तुम एक मील नहीं चल सकते तो तुम काम क्या कर सकोगे? आइंदा तुम मुझे अपना चेहरा तक मत दिखाओ।" जमीन्दार ने गुस्से में आकर कहा।

क़िले का क़ैदी

श्रीकांत और शंकर एक ही जहाज़ पर काम करते थे। श्रीकांत एक मेहनती, बुद्धिमान और ईमानदार कर्मचारी था। जहाज़ पर काम करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति उससे खुश था। जहाज़ का कप्तान तो उसे बहुत ही ज्यादा पसंद करता था और इसी कारण शंकर उससे जलता रहता था।

एक बार जहाज़ लम्बी यात्रा पर था, तभी कप्तान बीमार होकर मर गया। श्रीकांत बड़ी कुशलता से सारा काम संभालता रहा, इससे खुश होकर जहाज़ के मालिक ने श्रीकांत को ही कप्तान बनाने की घोषणा कर दी। श्रीकांत को सब पसंद करते थे इसलिए सब खुश हुए, केवल शंकर खुश नहीं हुआ, उसने मन ही मन तय किया कि वह श्रीकांत को किसी भी तरह कप्तान नहीं बनने देगा।

श्रीकांत खुश होता हुआ घर पहुँचा और अपने वृद्ध पिता को यह समाचार सुनाया। पिता ने कहा–"बेटा, आज मेरी सब से बड़ी इच्छा पूरी हो गयी। अब तुम सुशीला के घर जाकर शादी की तारीख तय कर दो, ताकि अब तुम यात्रा पर जाओ तो मेरे पास कोई तो रहे।"

सुशीला श्रीकांत की मंगेतर थी और शहर की सब से सुंदर लड़की मानी जाती थी। कई युवक उससे शादी करने को लालायित थे। श्रीकांत जब सुशीला के घर पहुँचा उसके कुछ देर पहिले ही रमाकांत नाम का एक युवक शादी का प्रस्ताव लेकर उसके पास गया था। सुशीला ने उससे कह दिया था कि वह सिर्फ़ श्रीकांत से ही शादी करेगी। सुशीला के इस उत्तर के कारण रमाकांत श्रीकांत का दुश्मन बन गया।

क्रांति त्रिवेदी

रमाकांत गुस्से मे भुनभुनाता जा रहा था, तभी रास्ते में उसे शंकर मिल गया। वे दोनों पुराने मित्र थे।

"कहो, इस तरह लाल-पीले होते कहाँ जा रहे हो?" शंकर ने पूछा।

"मुझसे मत बोलो, मैं होश में नहीं हूँ।" रमाकांत ने कहा।

"भाई, अपने मित्र को अपनी परेशानी भी नहीं बताओगे?" शंकर ने उसे सुशीला के मकान से निकलते देख लिया था। इसलिए वह रमाकांत की परेशानी का कारण जानने को उत्सुक था।

"सुशीला ने मुझसे शादी करने से बिलकुल इनकार कर दिया है। वह श्रीकांत से ही शादी करेगी।" रमाकांत मुँह लटकाकर बोला।

"तो तुम श्रीकांत को रास्ते से क्यों नहीं हटा देते?" शंकर उसे भड़काने लगा, क्योंकि इससे उसका भी लाभ था।

"लेकिन सुशीला कहती है कि यदि श्रीकांत को मैंने किसी तरह नुक़सान पहुँचाया या मार डाला तो वह भी जीवित न रहेगी।"

"तो फिर मैं ही इसका उपाय निकालूँगा कि श्रीकांत जीवित रहते हुए भी तुम्हारे रास्ते से हट जाये।" शंकर बोला।

रमाकांत बड़ा खुश हुआ। शंकर ने उसे बताया कि जब वे यात्रा से आ रहे थे, तो श्रीकांत कप्तान के कहने पर एक टापू पर गया था, जहाँ विद्रोही नेता हुए हैं और वहाँ से श्रीकांत एक पत्र लेकर आया है, यह भी मुझे मालूम है। मैं सरकार को यह सूचित कर दूँगा और वह पकड़ा जायेगा।"

इधर श्रीकांत ने सुशीला के पिता से मिलकर दूसरे दिन ही शादी करने की बात पक्की कर ली थी। दूसरे दिन जब श्रीकांत शादी की तैयारी में व्यस्त था, तभी पुलिस उसे पकड़कर मैजिस्ट्रेट के पास ले गयी। वहां जाकर श्रीकांत ने मैजिस्ट्रेट से प्रार्थना की कि उसे उसका अपराध बताये।

मैजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया—"तुम पर विद्रोहियों का साथी होने का आरोप लगाया गया है।"

श्रीकांत ने उसे बताया कि वह टापू में जरूर गया था, लेकिन केवल अपने मरते हुए कप्तान की अंतिम इच्छा पूरी करने और वहाँ पहुँचने पर उसे एक पत्र दिया गया। बस यही उसका अपराध है।

"अच्छा अगर वह पत्र तुम्हारे पास है तो मुझे दिखाओ।" मैजिस्ट्रेट ने कहा।

श्रीकांत ने अपनी जेब से निकालकर पत्र दे दिया। मैजिस्ट्रेट उस पत्र पर लिखा पता देखकर चौंक गया, क्योंकि उस पर उसके पिता का पता लिखा हुआ था। मैजिस्ट्रेट को मालूम था, यदि सरकार को पता चल गया कि उसका पिता विद्रोहियों से दोस्ती रखता है तो उसकी नौकरी चली जायेगी। मैजिस्ट्रेट ने श्रीकांत से पूछा—"क्या तुमने यह पत्र पढ़ा है?"

"नहीं, क्योंकि दूसरे का पत्र पढ़ना मैं एक अपराध मानता हूँ।"

"शाबास!" मैजिस्ट्रेट चालाकी से बोला—"तुम इस समय अपनी कोठरी में जाओ। यह पत्र तो मैं अभी जलाये देता हूँ और तुम्हें छुड़ाने की पूरी कोशिश करूँगा।"
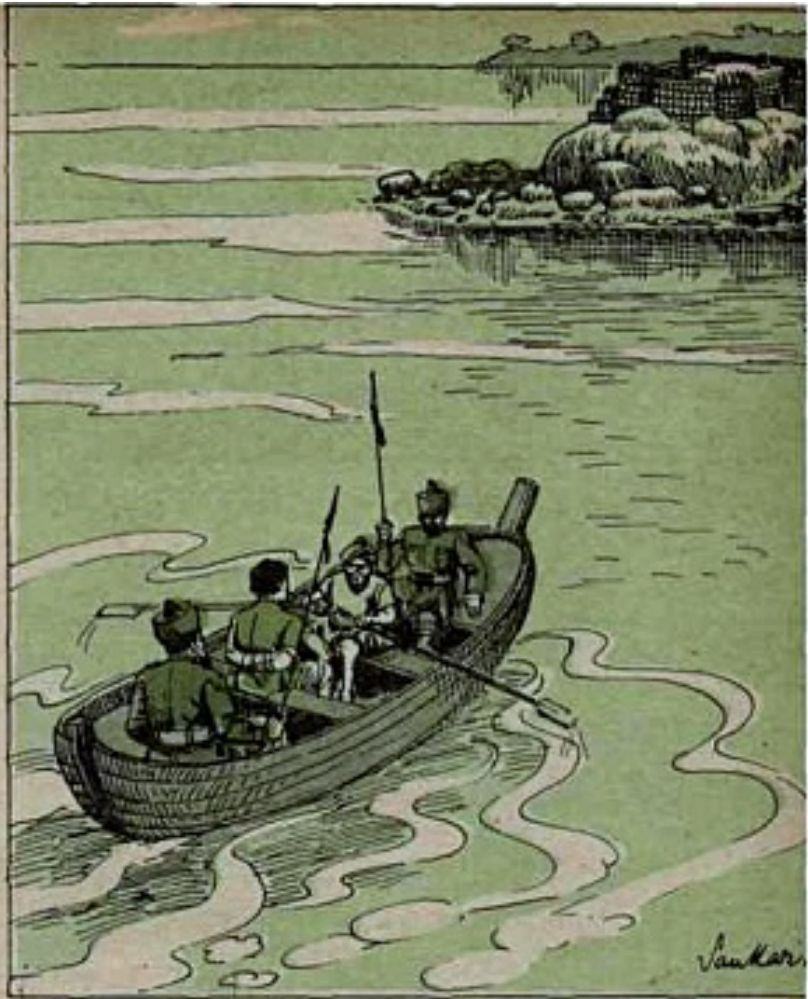
श्रीकांत चुपचाप सिपाहियों के साथ चला गया। एक दुर्ग के क़ैदखाने में उसे बन्दी बनाया गया।

एक दिन वह इतना निराश हो गया कि उसने भूखे रहकर जान देने का इरादा कर लिया और खाना-पीना बिलकुल छोड़ दिया। धीरे धीरे वह इतना कमज़ोर हो गया कि आँखें बंद किये मुर्दे जैसे पड़ा रहता। एक दिन वह यों ही पड़ा था कि उसे दीवाल में टक् टक् की आवाज़ सुनाई पड़ी। वह चौंक गया, क्योंकि आवाज़ से साफ़ पता चलता था कि दूसरी कोठरी का क़ैदी इस दीवाल को बाहरी दीवाल समझ कर उसमें छेद बना रहा है। श्रीकांत ने

सोचा कि इस तरह मरने के बजाय क्यों न उस कैदी की सहायता ही की जाये। श्रीकांत उठा और उसने पास में पड़ा हुआ खाना खाया, फिर अपने पानी का बर्तन तोड़कर उसके नुकीले टुकड़े से वह भी जिस जगह आवाज आ रही थी उधर ही खरोंच कर पत्थर ढ़ीला करने लगा।
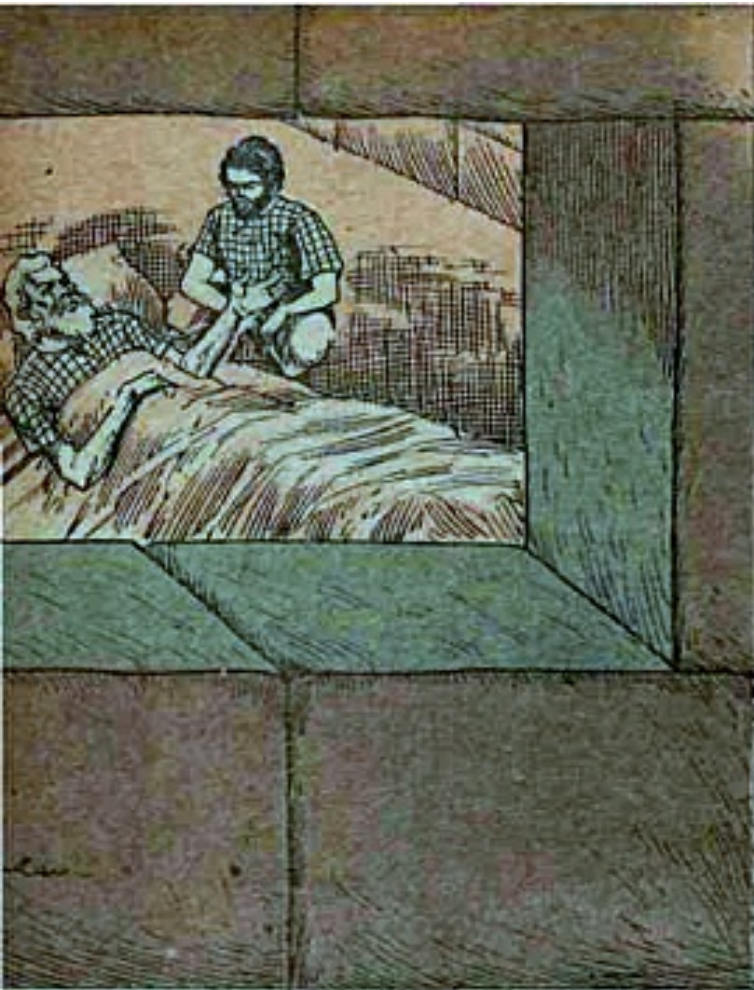
कुछ दिन बाद वह पत्थर ढ़ीला हो गया, और वह पत्थर हिलते हिलते हट गया और उस सुरंग से होकर एक सफ़ेद बालों वाला बूढ़ा कैदी श्रीकांत के कमरे में आ गया। श्रीकांत आश्चर्य से उसकी ओर देखता रहा, तो कैदी स्वयं ही बोला कि वह एक आजन्म कैदी है। इसके पहिले वह पुरोहित के पद पर काम करता था। ये दोनों इस तरह एक दूसरे से मिलने लगे।

श्रीकांत ने अपनी सारी कहानी बताकर बूढ़े से पूछा–"अब आप ही बताइये कि मुझे क्यों कैदी बनाया गया?"

बूढ़े ने उससे पूछा–"तुम कप्तान बननेवाले थे न? और तुम्हारी शादी भी एक सुंदर लड़की से होने जा रही थी' सोचकर बताओ कि इन दोनों बातों को रोकने से किसका फ़ायदा होता?"

श्रीकांत के दिमाग में एकदम ही रमाकांत और शंकर के नाम आये, फिर उसने अपने बूढ़े मित्र से पूछा–"लेकिन मैजिस्ट्रेट को मुझसे क्या दुश्मनी थी जो उसने मुझ निर्दोष को ऐसी कड़ी सज़ा दी।"

"तुम जो पत्र लाये थे जरूर ही उस व्यक्ति को बचाने के लिये उसने तुम्हें कैद में डाला। क्योंकि उसने पत्र पढ़कर जला दिया था।" बूढ़े ने बताया।

इतना सुनकर श्रीकांत ने गुस्से से दांत किट किटाकर कहा–"अच्छा तो इन्हीं तीनों ने मुझे इस हालत पर पहुँचाया है।"

बूढ़ा एक बहुत गुणी व्यक्ति था। उसने तरह तरह की विद्यायें श्रीकांत को सिखाईं। एक दिन बूढ़ा बहुत बीमार हो गया तो उसने श्रीकांत को अपने पास बुलाकर

कहा–"श्रीकांत तुम मेरे बेटे जैसे हो, इसलिए मैं मरते समय अपना सारा धन तुम्हें सौंप जाना चाहता हूं। मेरा सारा धन समुद्र के तट पर एक पहाड़ी गुफ़ा में छिपा है। यदि यहाँ से कभी छूट सको तो तुम जाकर सारा धन सम्भाल लेना।"

उसी रात को बूढ़ा पुरोहित मर गया। दूसरे दिन पहरेदारों ने शव को एक बोरी में बंद कर दफ़नाने को रख दिया और लोगों को बुलाने चले गये। श्रीकांत ने उनके जाने की आवज सुनी तो अपने मित्र के अंतिम दर्शन करने सुरंग की राह वहाँ आ गया। थैले में शव को देख उसे अपनी मुक्ति की राह सूझ गयी। वह फुर्ती से बढ़े का शव अपनी कोठरी में ले गया और उसे पलंग पर चादर से ढक दिया मानो कोई सो रहा हो और स्वयं बोरे में घुस गया। साथ उसने एक चाकू भी रख लिया जो उसे बूढ़े की कोठरी में छुपा मिला था, ताकि जब उसे जमीन में गाढ़ा जाये तो वह खोदकर बाहर निकल सके।

अंधेरा होने पर चार पहरेदार आये और बोरी को उठाकर समुद्र में फेंक दिया। वह तैय्यार था, जैसे ही बोरा समुद्र में गिरा, उसने चाकू से उसे फाड़ दिया और तैरते तैरते वह किनारे पर पहुँच गया, और चट्टानों के पीछे छिप गया। बूढ़े की बताई निशानियों के आधार पर गुफ़ा जल्द ही मिल गयी। ठीक जगह पर खोदने पर उसे लोहे का एक बड़ा बक्सा मिला।

से मिलाने ले गया। सुशीला तो श्रीकांत को पहचान गयी, लेकिन रमाकांत ने उसे नहीं पहचाना।

श्रीकांत की अपने धन के कारण शहर में बड़ी इज्जत थी। मैजस्ट्रेट की दूसरी पत्नी बड़ी लालची थी। श्रीकांत यह समझ गया कि यह औरत पैसे के लिये कुछ भी कर सकती है, बस, उसी के द्वारा उसने मैजस्ट्रेट से बदला लेने की ठानी। बातों ही बातों में श्रीकांत ने मैजस्ट्रेट की पत्नी से बता दिया कि उसके पास कुछ ऐसे विष हैं जो धीरे धीरे आदमी को मारते हैं और कोई जान नहीं पाता कि विष से मरा है। यह सुनते ही उस औरत की आँखें चमक उठीं। श्रीकांत भी समझ गया कि उसका तीर निशाने पर बैठा है। उस औरत ने वह जहर भी मांगा।

बक्से के अंदर ढेरों सोना, हीरे-जवाहरात थे। अब श्रीकांत एक बहुत धनी व्यक्ति हो गया। उसने कुछ जवाहरात अपने पास रख लिये और खज़ाना फिर छुपा दिया।

श्रीकांत ने बाक़ी धन लाकर एक आलीशान महल बनाया और बड़ी शान से रहने लगा। पर उसके मन में शांति न थी। वह अपने दुश्मनों से बदला लेने की तैय्यारी कर रहा था। उसने इन तीनों के बारे में सारी जानकारी हासिल की।

एक दिन श्रीकांत ने एक लड़के की जान बचाई। संयोग से यही रमाकांत और सुशीला का पुत्र निकला। एक दिन वह लड़का श्रीकांत को अपने माता-पिता

शंकर जहाज़ों के द्वारा विदेशों से व्यापार करता था। व्यापारी उसे माल उधार में देते थे। जो लोग उसे जहाज किराये पर देते थे, उन से श्रीकांत ने जहाज़ खरीदे, जहाजों को जिन बंदरगाहों पर पहुँचना था, वहाँ श्रीकांत ने पहुँचने नहीं दिया। यह समाचार मंगाया कि वे जहाज़ समुद्र में डूब गये हैं। कर्जदारों ने शंकर से अपना धन वसूल किया। इस तरह शंकर का दीवाला निकल गया और

इस तरह श्रीकांत ने शंकर से बदला ले लिया है।

रमाकांत जब सेना में था तब उसने अपने जनरल की सारी दौलत धोखे से हथिया ली थी। उसने धन की लालच में जनरल की हत्या भी कर डाली थी। श्रीकांत ने एक दिन अखबार में रमाकांत की पूरी कहानी छपवा दी। रमाकांत के बारे में अदालत ने जांच की और इस आरोप को सही पाया। अतएव उसकी सारी इज्ज़त धूल में मिल गयी। सुशीला और रमाकांत को तो इतना दुःख हुआ कि वे दोनों घर छोड़कर जाने लगे। रमाकांत इस बात से इतना दुःखी हुआ कि उसने आत्महत्या करके जान दे दी।

अब केवल मैजिस्ट्रेट से बदला लेने की रह गयी। एक विष उसने मैजस्ट्रेट की पत्नी को दे दिया था—जिसका उपयोग उसने शुरू कर दिया था।

मैजिस्ट्रेट की पहली पत्नी के एक पुत्री थी। मैजिस्ट्रेट की दूसरी पत्नी ने उस लड़की पर विष का प्रयोग किया। श्रीकांत ने पहले ही उस लड़की को समझाया था कि वह मरी हुई के समान अभिनय करे। मैजिस्ट्रेट ने सोचा कि उसकी पुत्री सचमुच मर गयी है। उसने अपनी लड़की को शवपेटिका में रखवा कर क़ब्र में डाल दिया। इसके बाद श्रीकांत ने उस लड़की को क़ब्र से निकालवा कर उसके साथ प्यार करनेवाले युवक के साथ विवाह कराया।

अचानक एक दिन मैजिस्ट्रेट अपने पिता के कमरे में श्रीकांत को देख आश्चर्य चकित हो गया। श्रीकांत ने उस वक़्त अपना सच्चा परिचय दिया। उसकी सारी कहानी सुनने पर मैजिस्ट्रेट का मतिभ्रमण हो गया और वह पागल बनकर गलियों में घूमने लगा। मैजिस्ट्रेट के पिता की श्रीकांत अपने पिता के सामने देख-भाल करने लगा। उसने अपने दुश्मनों से बदला ले लिया था, इसलिए वह अब संतोष के साथ अपने दिन बिताने लगा।

राजा का धोबी

एक राजा ने अपने लिए एक नये धोबी का प्रबंध किया। एक दिन राजा ने अपने नौकर को बुलाकर आदेश दिया—"तुम धोबी के घर जाकर कह दो कि वह हमारे धुले हुए कपड़े लेते आवे।"

राजा का नौकर जब धोबी के घर पहुँचा, तब धोबी एक एक गट्ठर उठाकर गधे पर लादते कह रहा था—"आज हुजूर पर ज्यादा बोझ डाल रहा हूँ। महाराज मेरी इस करतूत को माफ़ करे। मैं आपका गुलाम हूँ। मुझ पर नाराज न होवे। मैं आपका विश्वास पात्र नौकर हूँ।"

नौकर अचरज में आ गया। उसने राजा के पास जाकर जो कुछ देखा, सब बताते हुए कहा—"महाराज, हमारा धोबी पागल हो गया है।"

राजा ने धोबी को बुलवाकर बातचीत की तो उसने सही ढ़ंग से जवाब दिया। आख़िर राजा ने धोबी से पूछा—"अरे मैंने सुना है कि तुम गधे के साथ बड़ी विनय से बात करते हो, क्यों?"

"महाराज, यह बात हैं। हम निचली जाति के लोग हैं। आप जैसे लोगों के साथ बातचीत करने का तरीक़ा हमें अभ्यास के द्वारा सीखना पड़ता है। हम लोग आपस में 'अरे-तरे' पुकारा करते हैं। इज्जत के साथ बातचीत करनी हो तो मुझे इस गधे को छोड़ और क्या हैं? आप ही बताइये, महाराज!" धोबी ने जवाब दिया।

अलीबाबा-चालीस चोर

[४]

मर्जीना ने कूंड़े में से सारा तेल निकालकर एक बड़ी हांड़ी में भर दिया और तब तक वह तेल गरम किया जब तक वह खौलकर उबलने न लगे। इसके बाद एक छोटी बाल्टी में खौलनेवाला तेल भरकर कूंडों के पास गयी। हर एक कूंडे पर का खजूर का रेशा निकालकर तेल उस कूंडे में डालती गयी। उन कूंडों में बैठे चोरों को चिल्लाने तक का मौक़ा न मिला और वे वहीं पर ठण्ड़े हो गये। इस तरह मर्जीना ने सभी चोरों को मार डाला, फिर सभी कूंडों को खजूर के रेशे से ढक दिया। चूल्हा बुझाकर अपने कमरे में लौट आयी और इस बात का इंतजार करने लगी कि देखें क्या होता है?

आधी रात के समय चोरों का सरदार जाग उठा। खिड़की में से झांककर देखा, पर कहीं न दिया जल रहा था और न कहीं कोई आहट ही थी। उसने सोचा कि सभी लोग गहरी नींद सो रहे हैं। तब वह अपने साथ जो कंकड़ लाया था, उन्हें कूंडों पर फेंकने लगा। कूंडों से कंकड़ों के लगने पर आवाज़ तो निकली पर चोरों के निकलने की आहट सुनाई न दी। वह मन ही मन गुनगुना उठा—"ये सब कमबख़्त सो गये हैं।" तब वह पिछवाड़े की ओर दौड़ पड़ा। उसे चिरायंध आयी, जरा घबरा गया। उसने एक कूंडे पर से खजूर का रेशा हटाया तो कुनकुनानेवाला भाप ऊपर आया। उसने सूखी घास जलाकर उस रोशनी में सभी कूंडों की जाँच की, उसके सभी अनुचर मर पड़े थे।

चोरों के सरदार की समझ में आया कि उसका कैसे बड़ा नुक़सान हो गया है।

अरब की लोककथा

वह जल्दी चहारदीवारी लांघकर गली में आ पहुँचा। उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। वह सरदार वहाँ से दौड़कर गुफा में आया। वह गंभीरता के साथ सोचने लगा कि अब उसे क्या करना है।

मर्जीना को मालूम था कि उसके मालिक का परिवार खतरे से बच गया है। इसलिए उसने सवेरा होने तक इंतज़ार किया और रोज़ की भांति यथा समय अपने मालिक को जगाया। अलीबाबा जब नीचे उतर आया तब उसे मर्जीना एक कूंडे के पास ले गयी। उसका ढक्कन खोलकर मर्जीना ने कहा–"मालिक, अंदर झांककर देखिये तो क्या है?"

अलीबाबा ने कूंडे के भीतर देखा तो उसका शरीर कांप उठा। मर्जीना के मुँह से सारी बातें सुनकर उसने आनंद के आँसू बहाये और कहा–"मर्जीना, जिस माँ ने तुम्हारा जन्म दिया, वह धन्य है! तुमने मेरी जो मदद की, उसे ज़िंदगी भर भूल नहीं सकता। आज से तुम मेरे बच्चों में से एक हो। घर की मालिकिन भी तुम्हीं हो।"

अब्दुल्ला की मदद से अलीबाबा ने अपने बगीचे में बहुत बड़ा गड्ढा खोदा और उसमें सभी चोरों के शव गाड़ दिये। अलीबाबा की ज़िंदगी फिर मामूली तरह से चलने लगी। अलीबाबा का परिवार मर्जीना को एक देवी की तरह मानने लगा।

कासिम के मर जाने के बाद उसकी दूकान की देखभाल अलीबाबा का बड़ा बेटा किया करता था। एक दिन उसने अपने बाप से कहा–"हुसेन नामक एक आदमी ने हमारी गली में एक दूकान खोल रखी है। उसने मुझे दुपहर के वक़्त पाँच दिन खाना खिलाया। मैं सोचता हूँ कि इसके बदले एक दिन उसको अपने घर दावत पर बुलाना मुनासिब होगा। आप इजाज़त दीजिये।"

"ज़रूर, ऐसा ही बुलाओ, बेटा! यह बात तुमको पहले ही कहनी थी। कल

शुक्रवार है, हमारे लिए आराम का दिन है। कल रात को हमारे घर खाने के लिए बुलाओ। अगर वह संकोच करे तो जोर देकर बुला लाओ।" अलीबाबा ने अपने बेटे को समझाया।

अलीबाबा का बेटा अपने दोस्त हुसेन को दावत पर घर बुला लाया। अलीबाबा ने मुस्कुराते हुये दर्वाजे पर ही उस नये दूकानदार का स्वागत किया और कहा–"आज रात को आप हमारी मेहमानदारी स्वीकार कीजिये।"

हुसेन की बड़ी लंबी दाढ़ी थी। वह बड़ी अदब से बोला–"मुझे माफ़ कर दीजियेगा। मैंने बहुत दिन पहले ही यह क़सम खाई है कि नमक और मसाले मिलाया हुआ खाना नहीं खाऊँगा। इस लिए मैं आपका आतिथ्य स्वीकार नहीं कर सकता।"

"इसमें कौन बड़ी बात है? मैं ऐसा खाना बनवा दूंगा जिसमें नमक और मसाले न पड़े हों।" अलीबाबा ने जवाब दिया। तब उसने मर्जीना के पास जाकर यह बात समझा दी। वह अचरज में आ गयी, पर मालिक के कहे मुताबिक़ खाना बनवाया।

रात हो गयी। अलीबाबा और उसके बेटे के साथ हुसेन भी खाने बैठा। मर्जीना

और अब्दुल्ला ने उन्हें खाना परोसा। मर्जीना मेहमान की ओर ध्यानपूर्वक देखती रही। खाना खतम करके जब वे तीनों इधर-उधर की बात करके बैठे रहें, तब मर्जीना नर्तकी का वेष धरकर लौट आयी।

मर्जीना के वेष को देख अलीबाबा चकित रह गया। उसके माथे पर सोने की अशर्फ़ियां चकाचौंध किये हुए थीं। उसके गले में रंग-बिरंगे मनके झूल रहे थे। उसकी कमर में सोने के पायल थे। उसकी कमर में छुरी लटक थी। उसकी आँखों में काजल लगा था। उसके पीछे खेंजड़ी लेकर अब्दुल्ला आ पहुँचा। उसने

बड़ी अदब के साथ अपने मालिक के सामने झुककर सलाम किया और नाचना शुरू किया।

मर्जीना ने देर तक थकावट का अनुभव किये बिना नाच किया। उसने यहूदी, ग्रीक और फारसी नृत्य भी किये। वे सब उसके पैर और शरीर की ओर तन्मय हो देखते रह गये।

अंत में उसने खड्ग नृत्य शुरू किया। अपनी कमर में लटकनेवाले म्यान से उसने छुरी निकाली, रौद्र का अभिनय करते, डंसनेवाले नाग की तरह नाचते छुरी को अपनी छाती पर टिका दी, इसके बाद छुरी हाथ में लिये लट्टू की भाँति घूमते ऐसा अभिनय करने लगी, मानों वह अपने नकली दुश्मनों की छाती पर छुरी भोंक रही हो!. फिर अचानक अलीबाबा के सामने आकर घुटने टेक दी, खँजड़ी लेकर याचना करनेवाली सी छुरी आगे बढ़ा दी।

मर्जीना का यह नाच अलीबाबा को अच्छा न लगा। फिर भी जब उसने खँजड़ी बढ़ायी तब अलीबाबा ने उसमें एक दीनार डाल दिया। अलीबाबा के बेटे ने भी एक दीनार डाला। उसका दोस्त हुसेन दीनारों के वास्ते थैली निकाल रहा था, तभी मर्जीना उस पर झपट कर कूद पड़ी और उसकी छाती में छुरी भोंक दी। हुसेन ने गहरी साँस के साथ जान छोड़ दी।

अलीबाबा को लगा कि मर्जीना पागल हो गयी है। बेटे ने भी यही सोचा। मगर मर्जीना ने बड़ी शांति के साथ कहा– "इस घर को बचाने के लिए अल्लाह ने मुझे जो ताक़त दी, उसके लिए मैं अल्लाह को शुक्रिया अदा करती हूँ। यह बदमाश तेल का व्यापारी है। हुसेन नाम से दूकान खोलकर हमारा खातमा करने आया है।" इन शब्दों के साथ मर्जीना ने हुसेन की दाढ़ी पकड़कर खींच दी। नक़ली दाढ़ी होने के कारण वह निकल

आयी। अलीबाबा ने चोरों के सरदार को पहचान लिया।

मर्जीना ने दूसरी बार उसके घर की रक्षा की थी, इसलिए अलीबाबा ने खुशी में आकर उसके साथ गले लगाया और उसके माथे पर चूमते हुए कहा–"मर्जीना, मैं कह नहीं सकता कि तुम्हारे इस उपकार का ऋण कैसे चुकाऊँ? क्या तुम मेरे बेटे के साथ शादी करके मेरी बहू बनोगी?" मर्जीना ने खुशी से मान लिया। उसी वक़्त अलीबाबा के बेटे और मर्जीना की शास्त्रविधि के अनुसार शादी हुई। उस रात को बड़ी देर गये अलीबाबा ने चोरों के सरदार के शव को उसी गड्ढे में गाड़ दिया, जिसमें और चोरों को गाड़ दिया था।

मर्जीना की शादी के बाद कई दिनों तक अलीबाबा गुफ़ा की ओर न गया। क्योंकि दो और चोरों का उसे पता न चला था। मर्जीना ने यह सोचकर डरके मारे अलीबाबा को गुफ़ा की ओर जाने नहीं दिया कि वे दोनों चोर ज़िंदा हैं। मगर वे दोनों पहले ही मर गये थे।

एक साल बीतने पर अलीबाबा अपने बेटे और मर्जीना को साथ ले गुफ़ा में गया। मर्जीना ने गुफ़ा के चारों ओर जाँच की, वहाँ पर घास उगी थी और मनुष्यों तथा घोड़ों के चलने के निशान भी न थे। तब वह अलीबाबा से बोली–"हमें कोई डर नहीं है, मालिक, हम गुफ़ा के भीतर जा सकते हैं।"

अलीबाबा ने चट्टान की ओर हाथ फैलाकर कहा–"खुल जा, सम सम!" तुरंत चट्टान खुल गयी। भीतर के खज़ाने को कोई छुआ तक न था। अपने हाथ में आये हुए उस खज़ाने की ओर अलीबाबा ने गर्व से देखा। वे तीनों तीन बोरों में सोना और रत्न भरकर अपने शहर की ओर चल पड़े।

इस तरह लकड़ी काटनेवाला अलीबाबा उस शहर का सबसे बड़ा अमीर बन गया।

(समाप्त)

नवाब और सांड

एक बार बंगाल का नवाब राजा कृष्णचन्द्र के राज्य में गया और राजधानी में अपने डेरे लगाये। थोड़ी देर बाद उन डेरों की ओर एक मोटा सांड आया। नवाब ने अपने सिपाहियों के द्वारा सांड को पकड़वाया और उस दिन रात को उसे मारकर उसका मांस पकाने का रसोइयों को हुक्म दे दिया।

कुछ ही क्षणों में यह समाचार राजा को मालूम हुआ। वह सोच में पड़ गया। क्योंकि राजा ने अपने पिता के श्राद्ध के दिन उस पर मुहर लगवाकर यादगारी के लिए उस सांड को छोड़ दिया था जो अब नवाब और उसके परिवार का खाना बननेवाला था।

राजा को सोच में पड़े देख विदूषक गोपाल ने कारण जान लिया और नवाब के दर्शन करके बताया—"हुज़ूर, मैं अपने शहर की तरफ़ से आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने आया हूं। उस सांड को मार करके आप खायेंगे तो हमारा पिंड छूट जायगा। वह सांड दूकानों में घुसकर ही नहीं खाता, बल्कि गंदी चीजें भी खाता है। इसलिए हम उसे देख नाक-भौं सिकोड़ते हैं। मगर उस पर मुहर लगायी गयी है, इसलिए कुछ करते नहीं बनता। पर आप उसको मारकर खा करके हमारा बड़ा उपकार करने ज़ा रहे हैं।"

"छी, छी:" कहते नवाब ने उस सांड को छुड़वा दिया।

राजा ने गोपाल को कई पुरस्कार दिये।

पितृभक्ति
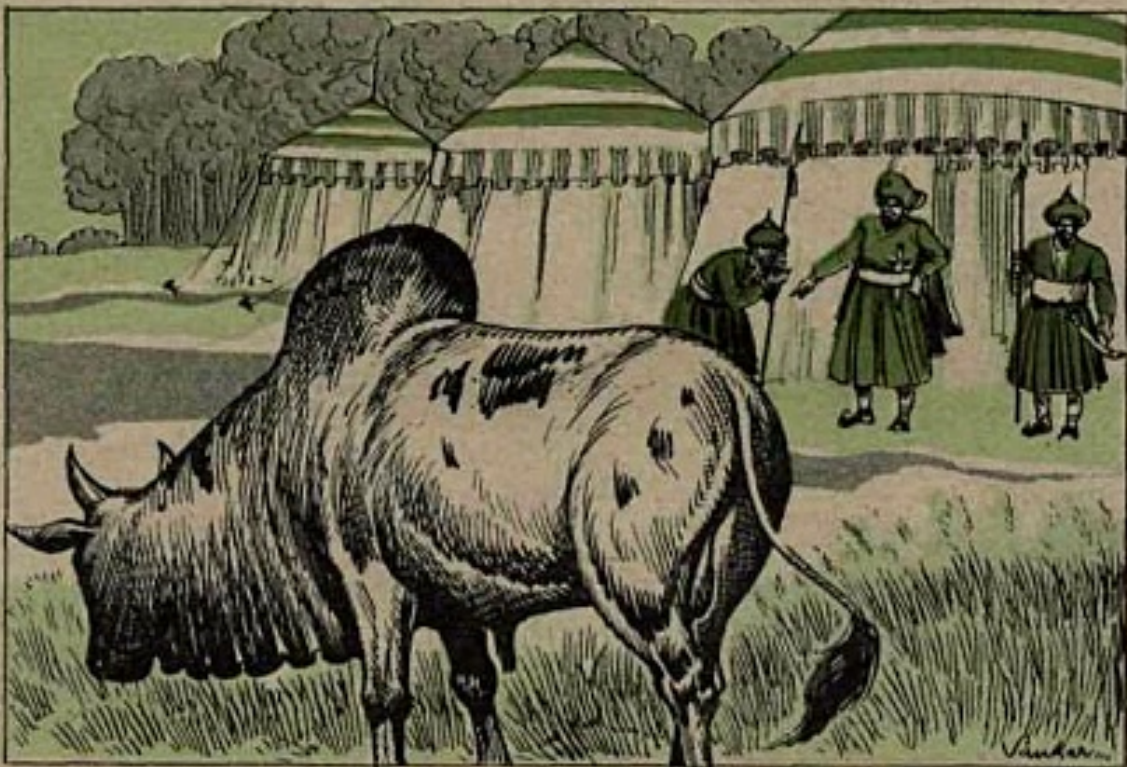
चीन देश के एक गाँव में टोंग नामक एक गरीब युवक था। उसकी माँ उसके बचपन में ही मर गयी थी। जब वह उन्नीस साल का हुआ, तब उसका बाप भी मर गया। उसके बाप ने एक कौड़ी भी बचा न रखी थी। इसलिए टोंग एकदम असहाय निकला।

टोंग को पहले अपने पिता का श्राद्ध करके समाधि बनानी थी। मगर उसके हाथ एक कौड़ी भी न थी, यह काम कैसे हो? धन पाने का एक ही उपाय था। वह यह कि टोंग गुलाम के रूप में बिक जाय! उसके दोस्तों ने उसे सलाह दी कि ऐसा काम न करो। मगर वे धन कमाने के लिए कोई दूसरा उपाय बता न पाये।

टोंग ने एक दफ़्ती पर अपना मूल्य और उसके गुलाम के रूप में बिकने के नियम वगैरह लिखकर उस दफ़्ती को अपने गले में लटका लिया। तब वह गुलामों के बिकनेवाली हाट में एक चबूतरे पर बैठ गया। गुलामों को खरीदनेवालों ने दफ़्ती पर उसकी शर्तें पढ़ लीं और वे आगे बढ़ गये। कुछ लोग टोंग की शर्तों को देख उसे लालची समझकर चले गये।

कारण यह था कि टोंग छोटी रक़म पर बिक जाना नहीं चाहता था। अपने पिता का श्राद्ध करने व समाधि बनाने के लिए जितनी रक़म की ज़रूरत थी, वह उतनी ही रक़म में बिक जाना चाहता था। उसे यह उम्मीद न थी कि वह कर्ज़ वह अपनी ज़िंदगी में चुका सकेगा। ज़िंदगी भर गुलाम के रूप में जीने के लिए वह तैयार हो गया था।

कई घंटे बीत गये, लेकिन उसे खरीदनेवाला कोई दिखाई न दिया। टोंग

चीन की लोक कथा

यह सोचकर घबराने लगा कि उस क़ीमत पर शायद उसे खरीदने के लिए कोई तैयार न होगा। तभी कोई अधिकारी उधर से आ निकला। उसने दफ़्ती पर टोंग की शर्तों को पढ़ा। अपने अनुचर के हाथ से धन दिलाकर शर्तनामा लिखवा लिया।

टोंग की इच्छा पूरी हुई। उसने अपने पिता का श्राद्ध किया, दान-धर्म किये। एक अच्छे शिल्पी को बुलाकर सुंदर समाधि बनवायी, तब अपने मालिक के घर जाकर काम पर लग गया। उसके रहने के लिए मालिक ने एक झोंपड़ी बनाकर दी। दिन बीतने लगे। टोंग को न सुख मिला और न आराम ही। वह इस बात पर दुखी भी न हुआ कि वह गुलाम की जिंदगी जीता है। उस हालत में भी वह अपने पिता के श्राद्धकर्म करता रहा।

एक साल फसल के दाँवने के वक़्त वह बुखार का शिकार हुआ। वह उस सख़्त बुखार में बेहोशी में पड़ा था, तभी उसे लगा कि उसके माथे पर किसी का शीतल हाथ छू गया है। उसकी कमज़ोरी धीरे से जाती रही। अपने शरीर में यह परिवर्तन देख टोंग को आश्चर्य हुआ। उसने आँख खोलकर देखा, तो कोई अपूर्व सुंदरी उस पर झुकी हुई सी दिखाई पड़ी। उसकी यह हिम्मत न हुई कि यह पूछे–"तुम कौन हो?"

वह सुंदरी टोंग के माथे पर हाथ फेरते हुए बोली–"मैं तुम्हारी बीमारी दूर करके तुम्हारी पत्नी के रूप में रहने के लिए आयी हूँ।"

टोंग को लगा कि वह युवती उसे कोई आदेश दे रही है। वह घबराकर चारपाई से उठ खड़ा हुआ। अब उसकी कमज़ोरी बिलकुल दूर हो गयी थी। उसे यह कहने की भी हिम्मत न हुई कि वह अपनी पत्नी को पालने की स्थिति में नहीं है। यह बात उस युवती ने मानों भांप ली और बोली–"हमारे पेट भरने की बात तो मैं देख लूंगी।"

टोंग बहुत शर्मिन्दा हुआ। उसने अपने चीथड़ों की ओर देखा। पर उस युवती के कपड़े भी फटे-पुराने थे। उसके शरीर पर कहीं कोई गहना न था। दोनों ने पूजा-मंदिर के सामने घुटने टेक दिये। पितृ देवताओं की पूजा करके दोनों पति-पत्नी बने।

उनका विवाह बड़ा विचित्र था। उस युवती का वंश क्या है? वह कहाँ से आयी? ये बातें टोंग ने बिलकुल न पूछीं। उसने केवल टोंग से यही कहा कि उसका नाम 'ची' है। इससे अधिक कुछ नहीं बताया। टोंग ने उस युवती को अपनी मालिकिन के रूप में माना। उसका गुलाम बनकर उसके प्रति श्रद्धा का भाव रखने लगा। अन्य गुलामों ने टोंग से उसकी पत्नी के बारे में कई सवाल पूछे,

मगर वह उनका जवाब न दे पाया। क्योंकि वह अपनी पत्नी के बारे में कुछ जानता न था। जब से वह युवती आयी, तब से उसकी यह भावना जाती रही कि वह भी एक गुलाम है।

उस युवती के आने से टोंग के घर का वातावरण ही बदल गया। घर सजाकर वह सुंदर बनाकर रखती थी। टोंग काम पर जाने के पहले भर पेट खाना खाता और खेत से लौटने पर खाना बिलकुल तैयार रहता।

टोंग की पत्नी करघे पर बैठकर रंग-बिरंगी चित्रोंवाले रेशमी वस्त्र बुनती, वे इतने सुंदर बनते कि उसकी निपुणता की खबर चारों ओर फैल गयी। व्यापारी रोज उसके घर आते, धन देकर रेशमी वस्त्र खरीद ले जाते। कुछ लोग अपनी पसंद के अनुसार कपड़े बुनवा लेते। कुछ लोग उस औरत से पूछते–"तुम यह विद्या हमें सिखाओ, तुम जितना धन माँगोगी, दे देंगे।" मगर वह सिखाती न थी, उल्टे कहती–"मैं सिखाऊं, तब भी तुम लोग सीख न सकोगे!" वास्तव में जब वह कपड़ा बुनती तब उसकी उंगलियाँ दिखाई न देतीं।

उस युवती ने जो बात कही थी कि 'पेट भरने की बात मैं देख लूंगी,' अपनी बात रख ली। अब टोंग की ज़िंदगी में किसी बात की कमी न थी। घर में तिजोरी भरती जा रही थी। एक दिन उस युवती ने तिज़ोरी खोलकर टोंग को चांदी के सिक्के दिखाये और उसमें से एक कागज निकालकर टोंग के हाथ में दिया। गुलामी से टोंग की मुक्ति का कागज़ था वह। टोंग के मालिक को उसका धन वापस मिल गया और टोंग की गुलामी खतम हो गयी। यह देख टोंग की आँखों से आनंदाश्रु निकल पड़े।

"दक्षिणी दिशा में मैं ने तुम्हारे वास्ते खेत और रेशमी कीड़ों के बगीचे खरीद लिये हैं। आज से तुमको दूसरों की नौकरी करने की जरूरत नहीं, तुम अपन

काम कर सकते हो।" उस युवती ने अपने पति से कहा। ये बातें सुनकर टोंग उसके पैरों पर गिरने को हुआ, पर उस युवती ने उसे रोका।

उस दिन से टोंग का भाग्य खुलता गया। वह जो भी काम करता, उसका अच्छा फल मिल जाता। उसके यहाँ काम करनेवाले लोग टोंग के प्रति बड़ा आदर दिखाने लगे।

इन्हीं दिनों में उस घर में करघा चलना बंद हुआ। क्योंकि टोंग की पत्नी गर्भवती थी। उसने समय पर एक सुंदर लड़के का जन्म दिया। उस लड़के को जो भी देखने आये, सब ने यही कहा—"यह मामूली बच्चा नहीं, वरदान से पैदा हुआ बच्चा है। सौ साल जीयेगा।"

जाड़े का मौसम आया। एक रात को पति-पत्नी बैठे बच्चे के भविष्य के बारे में बातचीत कर रहे थे। तब टोंग को उसकी पत्नी पहले से भी ज्यादा सुंदर दिखाई देने लगी।

सवेरा होने को था। टोंग की पत्नी झट उठ खड़ी हुई। उसका हाथ पकड़ कर बच्चे के झूले के पास ले गयी। न मालूम क्यों, टोंग उस वक़्त अपनी पत्नी को देख घबरा उठा। उसने आँखें बन्द करके उसके सामने घुटने टेक दिये। थोड़ी देर बाद सर उठाकर देखा तो उसका रूप बिलकुल बदल गया था। अब वह मामूली औरतों से ज्यादा ऊँची थी। उसके शरीर से कांति फूट रही थी।

"अब मुझे तुमको छोड़कर जाना है। मैं मानवी नहीं हूँ। तुम्हारे वास्ते मानवी बन गयी हूँ। मेरी स्मृति के रूप में तुम्हारे पास हमारा यह पुत्र होगा। तुम्हारी पितृभक्ति पर प्रसन्न होकर स्वर्ग के अधिपति ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। मुझे अब उनके पास लौट जाना है। मैं 'ची-नियू' नामक अप्सरा हूँ।" युवती ने कहा। धीरे-धीरे उसके शरीर की कांति गायब हो गयी और वह भी अदृश्य हो गयी।

अजीब मदद

एक गाँव में दो भाई थे। बड़े भाई के पास थोड़ी संपत्ति थी और छोटा बिलकुल गरीब था। इसलिए छोटे ने बड़े भाई के पास जाकर एक सेर चावल माँगा, पर बड़े ने देने से इनकार कर दिया।

उसी दिन रात को छोटें भाई के दर्वाजे को किसी ने खटखटाया और कहा–"झाड़ी में खज़ाना है। ले आओ।" छोटा भाई दर्वाज़ा खोलकर देखने से भी डर गया। यह बात उसने अपने बड़े भाई से कह दी तो उसने यही जवाब दिया–"इस बार तुम यही बात सुनोगे तो मुझसे कह दो।"

दूसरे दिन रात को किसी ने छोटे के दर्वाज़े को खटखटाया और कहा–"झाड़ी में खज़ाना है, लेते आओ।" छोटे ने अपने बड़े भाई को जगाकर यह बात कह दी और वह फिर लेट गया। आधी रात के समय बड़े भाई ने जाकर झाड़ी में देखा तो वहाँ पर एक मरे हुए घोड़े का शव था। बड़े भाई को बड़ा गुस्सा आया। वह घोड़े का एक पैर काट लाया और खिड़की में से छोटे के कमरे में डाल दिया।

दूसरे दिन बड़े ने आकर खिड़की में से देखा तो छोटा भाई सोने के सिक्के गिन रहा था। झाड़ी में जाकर देखा तो घोड़े की लाश न थी।

बड़े भाई ने छोटे से पूछा–"अरे, परसों तुमने चावल माँगा था, क्या दे दूँ?"

"अब मुझे ज़रूरत नहीं, भैया!" छोटे ने जवाब दिया।

दुश्शासन की प्रेरणा पाकर दुर्योधन अपने पिता के पास गया और बोला–"हमने जुए में जो कुछ जीता, सब आपने खो दिया। पांडव युद्ध में हमारा सर्वनाश करेंगे। उनके पास अपार शक्ति है। उनको फिर से जुआ खेलने को बुला भेजो। इस बार उनको जुए में हराकर वनवास में भेज देंगे और उस अवधि में हम सभी राजाओं को अपने पक्ष में कर लेंगे। तब पांडवों को युद्ध में हम आसानी से हरा सकते हैं।"

धृतराष्ट्र ने इस सलाह को मान लिया। भीष्म, द्रोण, विदुर वगैरह ने मना किया। गांधारी ने विरोध किया। यहाँ तक बताया कि कौरव-वंश का नाश होगा। धृतराष्ट्र ने अपनी पत्नी से बताया कि भले ही वंश का विनाश हो पर जुए को रोकना उसके लिए संभव नहीं है। साथ ही पांडवों को जुए के लिए निमंत्रित करने प्रातिकामी को भेजा।

युधिष्ठिर यह जानते हुए कि फिर से जुआ खेलना खतरे से खाली नहीं है, अपने भाइयों तथा परिवार को साथ ले जुआ खेलने हस्तिनापुर आ पहुँचे।

जुआ प्रारंभ होने के पहले शकुनि ने युधिष्ठिर से कहा–"इस बार का दाँव यह है कि जो जुए में हारते हैं, उन्हें वल्कल पहनकर बारह साल का वनवास करना होगा और उसके बाद एक साल अज्ञातवास। अज्ञातवास के समय अगर

२६. पांडवों का वनवास

प्रकट हो गये तो फिर बारह साल वनवास और एक साल अज्ञातवास करना होगा। तेरह साल बाद फिर से अपने-अपने राज्यों पर शासन कर सकते हैं।"

शकुनि के द्वारा ये शर्तें सुनकर सभा में बैठे सभी लोग भयभीत हो चिल्ला उठे— "धृतराष्ट्र अपने विवेक को खोकर अपने पुत्र के हाथ का खिलौना बना है तो बड़े बुजुर्ग उसको क्यों नहीं रोकते?" इस पर युधिष्ठिर ने शकुनि से बताया—"राजधर्म का पालन करने का मैंने निश्चय किया है। इसलिए षड्यंत्र रचनेवाले भी यदि जुआ खेलने निमंत्रण दे तो खेलना ही होगा।" शकुनि ने पांसे फेंके, युधिष्ठिर जुए में हार गये। दाँव की शर्त के मुताबिक़ युधिष्ठिर, उनके भाई और द्रौपदी वल्कल पहने, जटाएँ धारण कर, हाथों में हिरण के चमड़े ले वनवास के लिए तैयार हो गये। उन्हें देख दुश्शासन ने कहा—"इतने साल बाद पांडवों को कठिनाइयों में फँसे देख हमारा जन्म धन्य हो गया। अब दुर्योधन के शासन में कोई रोक-टोक न होगी। ऐश्वर्य के मद में पांडवों ने हमको हल्का समझा। अब उनका अच्छा अपमान हो गया। वे जंगली जानवरों की भाँति ज़िंदगी बितायेंगे। हमारी समता कर सकनेवाला कोई न होगा।" इसके बाद वह द्रौपदी से बोला—"पांचाली, इन दरिद्र पांडवों के साथ जंगल में क्यों यातनाएँ भोगना चाहती हो? कौरवों में से किसी को वरण करके, दास-दासियों की सेवा पाते समस्त प्रकार के सुख भोगो।"

भीम ये बातें सुनकर सिंह की भाँति गरजकर बोला—"अरे पापी, शकुनि ने जुएँ में दगा दिया तो तुम ऐंठ रहे हो? वरना तुम इस तरह बक सकते थे? लड़ाई के समय तुम्हारी हड्डी-बोटी को तोड़ते देख ये लोग क्या कहनेवाले हैं, मैं भी तो देखूँगा। तुमको ही नहीं, तुम्हारे आश्रय में रहनेवाले सब को यमलोक में भेज दूंगा। यही मेरी प्रतिज्ञा है।"

इसके बाद भीम ने दुर्योधन की ओर घूमकर कहा–"अरे मूर्ख! अभी हुआ क्या? जिस दिन में तुमको युद्ध में मार डालूंगा, उस दिन इसका जवाब दूंगा।"

पांडव जब उस प्रदेश से निकलने लगे तब भीम ने मुड़कर एक बार सभा को देखा और कहा–"तुम लोग याद रखो, इस पापी दुर्योधन को मैं युद्ध में बुरी तरह से मार डालूंगा। इसके मित्र कर्ण को अर्जुन, शकुनि को सहदेव मार डालेंगे। दुश्शासन भी मेरे हाथों में मरेगा। यह जो दुष्ट चतुष्टय है, इनकी मौत हमारे हाथों से होगी!"

अर्जुन ने भीम को रोकने का प्रयत्न करते हुए कहा–"चौदह वर्ष बाद हमें जो काम करना है, उसकी घोषणा अभी से क्यों करते हो? यह भी तब होगा जब तेरह साल बाद यह दुष्ट हमें अपना राज्य न देगा! तब अवश्य यह काम करेंगे।"

सहदेव ने शकुनि से कहा–"अरे नीच! पांसें फेंकने में धोखा देना नहीं, युद्ध भूमि में अपना प्रताप दिखाओ। भीम के कहे अनुसार मैं तुम्हारा वध करूंगा। इस बीच में तुम अपने सभी कार्य समाप्त करके मरने के लिए तैयार हो जाओ।"

नकुल ने रौद्र रूप धारण कर कहा–"इस सभा में द्रौपदी का जिन लोगों ने अपमान किया, उन सब को हम कीड़ों की तरह कुचल डालेंगे! यह निश्चय है।"

इस प्रकार पांडवों ने शपथ की, तब धृतराष्ट्र, भीष्म, सोमदत्त, बाह्लिक, कृपाचार्य, द्रोण, अश्वत्थामा, विदुर, संजय आदि बुजुर्गो से विदा ले, फिर से मिलने का आश्वासन देकर पांडव चल पड़े।

दुष्ट चतुष्टय से डरकर शेष लोगों ने तो कुछ नहीं कहा, मगर विदुर ने युधिष्ठिर से कहा–"धोखे की वजह से जो हारता है, उसे दुखी होने की जरूरत नहीं है। तुम्हारे साथ रत्न जैसे भाई, बुद्धिमती द्रौपदी तथा ज्ञानी धौम्य हैं, इसलिए तुम्हें किसी बात की कमी न होगी। तुम सब

भाई आपस में मिले रहते हो, इसलिए तुम लोगों के बीच कोई फूट पैदा नहीं कर सकता। तुमको कोई हरा भी नहीं सकता। तुम्हारी माँ की अवस्था ज्यादा है, वह तुम लोगों के साथ वनवास नहीं कर सकतीं। इसलिए उनको मेरे घर छोड़ जाओ। तुम मेरी बात मानो, और जाओ! तुम लोगों का शुभ हो! फिर हम लोग शीघ्र मिलेंगे।" विदुर ने और अनेक प्रकार से युधिष्ठिर को समझाया।

युधिष्ठिर ने विदुर से कहा—"आप मेरे पिता व गुरु के समान हैं। आपके कहे अनुसार चलूंगा।"

द्रौपदी ने अंतःपुर में कुंती, गांधारी तथा अन्य पुण्य स्त्रियों को प्रणाम किया, अपनी उम्र की नारियों के साथ आलिंगन किया, आँखों में आँसू भरकर कहा—"मैं वनवास को जाती हूँ।"

कुंती ने द्रौपदी को समझाया—"तुम सभी बातें अच्छी तरह से जानती हो। पतियों के साथ पत्नी का होना कर्तव्य कहलाता है। इसलिए तुम रोओ मत! तुम ने सचमुच कौरवों को क्रोध भरी दृष्टि से देखा होता तो ये लोग भस्म हुए होते। मैं तुम से एक बात अवश्य कहना चाहूँगी। बाक़ी चारों की अपेक्षा सहदेव भिन्न है। वह बचपन से ही कोमल स्वभाव का है। कष्ट झेल नहीं सकता। उस पर ज़रा विशेष ध्यान रखो। हो आओ बेटी! धर्म की विजय होकर तुम लोगों का शुभ होगा।"

खुले केशों के साथ द्रौपदी ज़ोर से रो पड़ी और अंतःपुर से निकली। कुंती भी द्रौपदी के साथ अपने पुत्रों के पास आयी। वे सब मुनियों का वेष धरकर वन के लिए चल रहे थे। कुंती ने उन्हें देख आँसू बहाते हुए कहा—"पुत्रो, तुम लोग धर्म का पालन बड़ी श्रद्धा से करते आ रहे हो। फिर भी तुम्हें वनवास करना पड़ रहा है। मैं नहीं जानती कि ईश्वर की कृपा तुम पर

नहीं है या मेरे गर्भ में पैदा होने के कारण तुम लोगों को ये कष्ट झेलने पड़ रहे हैं। न मालूम तुम लोग वनवास कैसे कर सकोगे? तुम्हारी इस बुरी हालत को देखने के पहले तुम्हारे पिता और माद्री ने देहत्याग किया। वे ही भाग्यवान हैं। मैंने पूर्व जन्म में कोई महान पाप किया होगा, इसीलिए तुम्हारे इन कष्टों को देखने के लिए जीवित हूँ! आज तक मैंने तुम लोगों के साथ कष्टों में भाग लिया, अब तुम लोग मुझे अकेली न छोड़कर अपने साथ ले जाओ। दीनों का रक्षक कृष्ण भी इस ससय हमारी सहायता नहीं कर सके।"

इसके बाद कुंती ने सहदेव से कहा– "बेटा, तुम वनवास में मत जाओ। तुम मेरे ही पास रहोगे तो मैं समझूंगी कि मेरे सभी पुत्र मेरे पास ही हैं।" ये शब्द कहते वह रो पड़ी। विदुर उसको समझा-बुझाकर अपने घर ले गया।

पांडव अपनी माँ को प्रणाम करके वनवास के लिए निकल पड़े। द्रौपदी खुले केशों के साथ उनके पीछे चली। युधिष्ठिर ने अपने मुँह को वस्त्र से ढक लिया। भीम अपनी भुजाओं को फैलाये चला। अर्जुन बालू फेंकते चला गया। नकुल ने अपने सारे शरीर में राख मल लिया। सहदेव ने शरीर पर मिट्टी मल ली। धौम्य उनके आगे चलते रौद्र तथा याम्य सामगान करता गया। [मुखपृष्ठ का चित्र]

कुछ समय बाद धृतराष्ट्र ने विदुर को बुलाकर पूछा–"पांडव वनवास के लिए कैसे चल पड़े?" तब विदुर ने उसका उचित जवाब दिया।

"उस रूप में जाने का क्या मतलब है?" धृतराष्ट्र ने पूछा।

"तुम्हारे पुत्रों ने जो अन्याय किया है, उसकी वजह से युधिष्ठिर को भारी क्रोध हुआ। उसका डर था कि उसकी वह क्रोधदृष्टि पड़ने पर लोग भस्म हो जायेंगे। यह सोचकर मुख पर वस्त्र ढक लिया।

क्रियायें करूँगा। राजन्, तुम्हारी मूर्खता के कारण कौरवों का विनाश होनेवाला है।" विदुर ने समझाया।

पांडवों के चले जाने पर दुर्योधन, दुश्शासन, कर्ण व शकुनि जो दुष्ट चतुष्टय हैं, द्रोण के पास जाकर बोले–"महानुभाव! पांडवों से हमने जो राज्य जीता, उस पर आप शासन कीजिये। आप से बढ़कर इसके योग्य दूसरे कोई नहीं हैं।"

यह बात सुनकर द्रोण ने कहा–"पांडवों को हराना किसी से संभव नहीं। मेरे प्रति दुर्योधन आदि आदर भाव रखते हैं, इसलिए मैं उन्हें भी त्याग नहीं सकता। पांडव अपने वादे को पूरा करके युद्ध के लिए तैयार होकर लौट आयेंगे। मेरे

भीम ने दुनिया को अपने भुज-बल का परिचय दिया। अर्जुन ने यह प्रकट किया कि बालू की भाँति बाण फेंककर शत्रुओं का संहार करूँगा। नकुल ने इसलिए राख मल लिया कि उसके सौंदर्य को देख लोग यह सोचकर दुखी हो जायेंगे कि मैं कष्ट झेलनेवाला हूँ, अपने दुख को लोगों पर प्रकट न होने देने के लिए सहदेव ने मिट्टी डाल ली। द्रौपदी भीगी साड़ी पहने, केश खोले चली, जिसका अर्थ है कि चौदह साल बाद तुम्हारी बहुएँ भी विधवाएँ बनकर इसी प्रकार रोयेंगी। धौम्य ने दाभों को हाथ में लिये रौद्र साम पढ़ा जिसका मतलब है कि आगामी युद्ध में मरनेवालों की अंतिम

हाथों में पराजित हो कर द्रुपद ने महा यज्ञ किया और मुझे मार डालनेवाले पुत्र तथा अर्जुन की पत्नी बनने योग्य पुत्री को प्राप्त किया। धृष्टद्युम्न द्रौपदी के विवाह के द्वारा पांडवों का रिश्तेदार बना। इन सब के साथ कृष्ण भी पांडवों के पक्ष में हैं। अर्जुन के समान अतिरथी वं महारथी इस जगत में कोई नहीं है। सब कोई जानते हैं कि मेरी मृत्यु धृष्टद्युम्न के हाथों में होने वाली है। इन सब का कारण तुम्हीं लोग बने हुए हो। इससे बढ़कर दुख का कारण और क्या हो
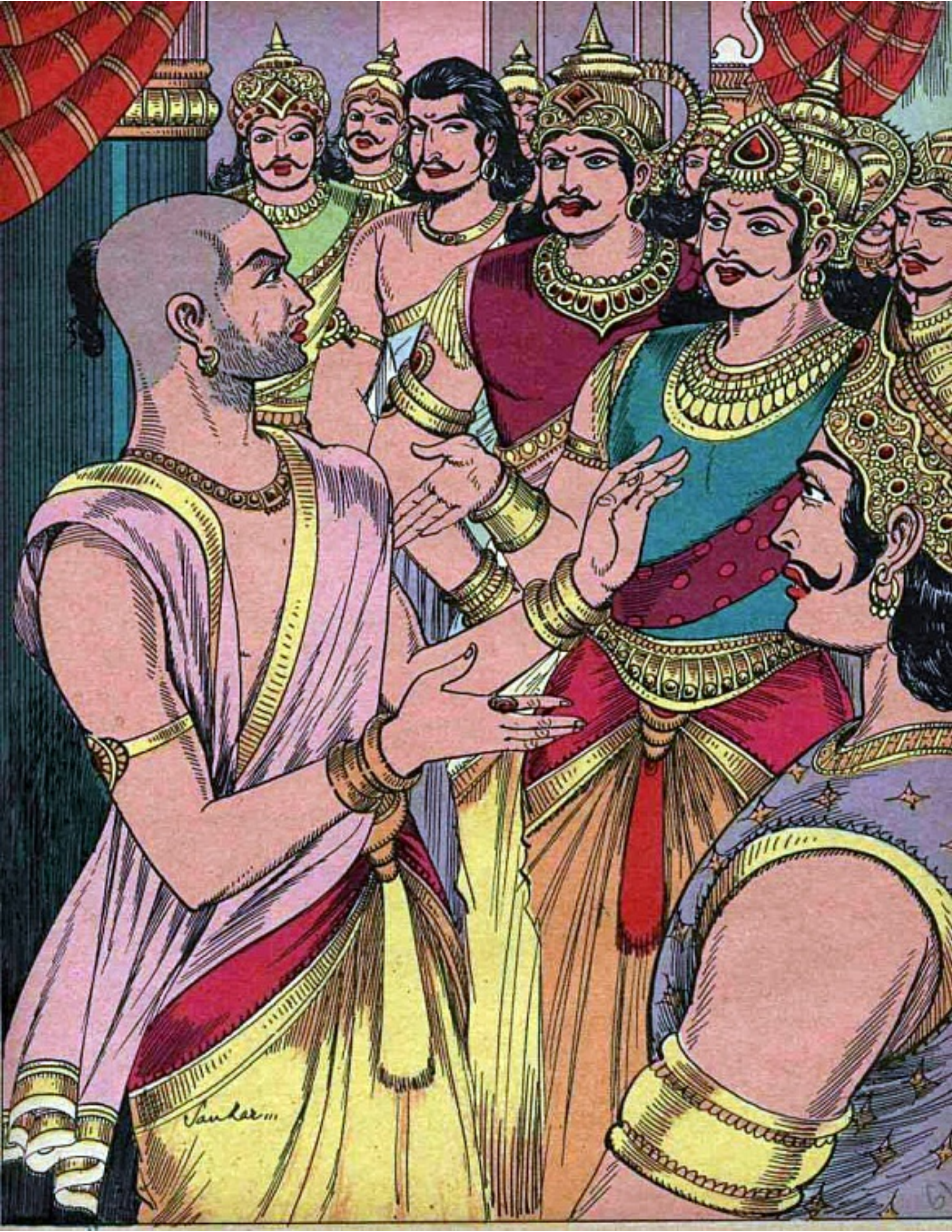
सकता है! अब तुम लोगों को यही करना होगा, यदि दूसरों की भलाई करना चाहे तो धर्म का पालन करो। नहीं, अगर केवल सुख ही चाहते हो तो इन तेरह वर्षों के भीतर सुख भोगो। इसके बाद कौरवों का विनाश निश्चित है।"

ये बातें सुनने पर धृतराष्ट्र घबरा गया और विदुर से बोला–"विदुर, द्रोणाचार्य का कहना सही है। तुम वनों में जाकर पांडवों को वापस बुला लाओ। यदि आने से वे लोग इनकार करे तो उनसे कह दो कि हस्तिनापुर में सम्मान पाकर फिर लौटे।" ये शब्द कहते उसका मन विकल हो उठा।

तब संजय ने धृतराष्ट्र से कहा–"राजन्, यह सारा राज्य तुमको राजा पांडु ने जीतकर सौंप दिया है। तुमने उनके पुत्रों को जंगलों में भटकने के लिए खदेड़ दिया। अब दुख किसलिए करते हो?"

"दुख क्यों न होगा? पांडव अतिरथी ही नहीं, बल्कि युद्ध में निपुण और बलवान भी हैं। ऐसे लोगों के साथ शत्रुता होने पर दुख क्यों न होगा?" धृतराष्ट्र ने कहा।

"यह शत्रुता तुमने जान-बूझकर मोल ली है? पूज्य भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य और तुम्हारे मंत्री विदुर के मना करने पर भी तुमने नहीं माना। तुम्हारे पुत्र को न अक़्ल है और न लज्जा ही। प्रातिकामी को भेजकर रजस्वला द्रौपदी को भरी सभा में बुला भेजा। उसके वस्त्र उतारवा कर उसका अपमान किया। उसका शाप तुम्हारे वंश को अवश्य लगेगा। कहा जाता है कि विनाश काल के निकट आने पर देवता हमारी बुद्धि को बिगाड़ देते हैं। समय ही ऐसा है कि अन्याय न्याय के रूप में माना जा रहा है।" संजय ने समझाया।

"तुम्हारा कहना सही है। पुत्र-प्रेम में पड़कर मैंने तुम लोगों की नसीहतें नहीं सुनीं, मेरे पुत्र ने जो कुछ करने को कहा, मैंने किया। अब करूँ क्या? भगवान ही हमारी रक्षा करें!" धृतराष्ट्र ने कहा।

शिवपुराण

[३]

दक्ष के यज्ञ को ध्वंस करने के लिए शिवजी का आदेश पाकर भद्रकाली और वीरभद्र अपने गणों के साथ चल पड़े। तब दक्ष के यज्ञ-प्रदेश में अनेक उत्पात मच गये। बिजली गिरी, रक्त की वर्षा हुई। आसमान से साँप, बिच्छू और कीड़े गिर पड़े। यज्ञशाला में सफ़ेद बिच्छू फैल गये। अग्निकुण्ड से धुआ उठा। वहाँ के कुछ लोगों ने दक्ष की निंदा की, और बाक़ी लोग डरकर भाग खड़े हुए।

इस बीच वीरभद्र के गण यज्ञशाला को घेर कर बाहर आनेवालों को सताने लगे। वीरभद्र ने अपने प्रमुख अनुचरों के साथ यज्ञशाला में प्रवेश किया। वे सब भीतर बैठे देवता और ऋषियों को पीटने लगे। दक्ष को देखते ही वीरभद्र को अपने पिता शिवजी के दुख का स्मरण हो आया। उसने क्रोध में आकर दक्ष का सर काट दिया और होमकुण्ड में उसका होम किया।

बाद वीरभद्र ने ऋत्विक, देवता तथा यज्ञशाला में बैठे अन्य लोगों को संबोधित कर कहा–"शिवजी के द्रोही दक्ष के यज्ञ में भाग लेने आये हुये तुम सब लोग इसका फल भोगो।" इन शब्दों के साथ उनको अनेक प्रकार से सताया। यज्ञशाला और यज्ञ के उपकरणों का सर्वनाश किया गया। तब भद्रकाली और वीरभद्र आनंद के साथ नृत्य करने लगे।

दक्ष की पत्नी प्रसूती तथा अन्य लोगों ने प्रवेश करके उनकी प्रार्थना की और उन्हें शांत किया। तब भद्रकाली और वीरभद्र अपनी सेनाओं के साथ कैलास को लौट पड़े। शिवजी को प्रणाम करके उनके सामने खड़े हो गये।

अंतिम पृष्ठ का चित्र

इस बीच में वीरभद्र इत्यादि के द्वारा पीटे जानेवाले देवता और ऋषि ब्रह्मा के पास गये और उन्हें सारी बातें कह सुनायीं। ब्रह्मा उन सबको साथ ले वैकुण्ठ में गये और भगवान विष्णु से दक्ष के यज्ञ का ध्वंस तथा वीरभद्र के द्वारा दक्ष का संहार इत्यादि बातें सुनायीं। सब मिल कर कैलास पर्वत पर आ पहुँचे। तब शिवजी ध्यानसमाधि में निमग्न थे। उनके चारों तरफ़ वीरभद्र तथा अन्य गण खड़े हुए थे।

शिवजी ने समाधि से उठकर ब्रह्मा, विष्णु, देवता और ऋषियों को देखा और उन सबको बिठाया। विष्णु ने शिवजी से कहा—"सदाशिव, अपने क्रोध और दुःख को भूल जाओ। प्रकृति की माया में न पड़ो। तुम्हारे साथ द्वेष करके दक्ष ने उसका फल प्राप्त किया है। मगर दक्ष के द्वारा प्रारंभ किया हुआ यज्ञ पूरा न हो जाय तो अनावृष्टि के कारण सारे संसार का नाश होगा। इसलिए तुम दक्ष को जिला कर उसका यज्ञ पूरा कराओ।"

शिवजी ने विष्णु की बात मान ली। और कहा—"हम सब जाकर दक्ष के यज्ञ को पूरा करके जगत की रक्षा करेंगे।" जब वे सब यज्ञशाला में पहुँचे, तब वहाँ पर बीभत्स दिखाई दिया। अग्निकुण्ड में दक्ष का सर जल कर राख हो गया था।

शिवजी ने वीरभद्र से कहा—"तुम उत्तरी दिशा में जाओ और जो उत्तरी दिशा की ओर सर करके लेटा होगा, उसका सर काट लाओ।"

वीरभद्र एक भेड़ का सर काट लाया। दक्ष के धड़ से उस सर को जोड़कर उसे जिलाया गया। उसके द्वारा वैदिक ढंग से यज्ञ कराया गया। इस बार दक्ष ने यज्ञ में शिवजी को भी हिस्सा दिया। इसके बाद उसने अपनी भूल याद की, शिवजी से क्षमा माँगते हुए कहा—"मैंने तुम्हारे महत्व को जाने बिना तुम्हारी निंदा की। इसकी वजह से मेरा सर कट

गया। तुम्हारी कृपा से मुझे सद्‌बुद्धिवाला सर प्राप्त हुआ। इसलिए मेरे अपराधों को क्षमा कर मेरी रक्षा करो।"

शिवजी ने दक्ष को क्षमा किया और कहा—"दक्ष, बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता। मैंने तुम्हारे अपराधों को क्षमा कर दिया। तुम कोई वर माँगो।"

तब दक्ष तथा उसकी पत्नी ने कहा—"जहाँपर दक्ष-यज्ञ हुआ है, वह दक्षवाटिका नाम से प्रसिद्ध हो और वह शिवजी का मंदिर बने।" इस बात को स्वीकार करके शिवजी ने वीरभद्र तथा भद्रकाली से कहा—"इस प्रदेश के पूर्वी-दक्षणी दिशा में गौतमी नदी के तट पर अपने गणों के साथ निवास करो।" इसके बाद शिवजी ने भद्रकाली समेत वीरभद्र को गणाधिपति बनाया और सतीदेवी के शरीर को लेकर ब्रह्मा और विष्णु के साथ कैलास लौट आया। वहाँ से ब्रह्मा, विष्णु व ऋषियों को भेज दिया, तब सतीदेवी के शरीर को बगल में रखकर तपस्या में लीन हो गया।

दक्ष की पुत्रियों में स्वधा एक थी। उसने पितृदेवताओं की पत्नी बनकर मेनका, धन्वा, कलावती नामक तीन पुत्रियों का जन्म दिया। वे बड़ी सुंदर थीं। वे सबकी इच्छाओं की पूर्ति करते समस्त लोकों में विहार किया करती थीं।

एक बार वे तीनों कन्याएँ महालक्ष्मी तथा विष्णु को देखने गयीं। उन्हें अपने नृत्य और गानों के द्वारा प्रसन्न किया। बैठकर बातें कर रही थीं, तभी ब्रह्मा के मानस-पुत्र सनकसनंदन इत्यादि आ पहुँचे। उन्हें देखते ही विष्णु के साथ सब खड़े हो गये। सबने आगे बढ़कर प्रणाम किया और सत्कार किया। मगर मेनका, धन्वा और कलावती अपने आसनों से नहीं उठीं।

इसे देख सनत्कुमार ने क्रोध में आकर उन्हें शाप दिया—"तुम तीनों बड़ी गर्वीली बन गयी हो, स्वर्ग में रहने योग्य नहीं हो। भूलोकवासियों के साथ विवाह करके वहीं पर रह जाओ।"

तब वे कन्याएँ पश्चात्ताप करके निवेदन करने लगीं–"हे मुनीश्वर! अज्ञान के कारण हमने जो अपराध किया है, उसे क्षमा करके हमको शाप से मुक्ति दिलाइये।"

इस पर सनकसनंदन आदि ने कहा–"गर्व का प्रायश्चित गर्व का खतम होना ही है। अब रही शाप की बात! इस शाप के द्वारा जगत का कल्याण ही होगा।" (यह शाप कैसे सत्य हुआ, जानते हैं? इन तीन कन्याओं से पैदा हुई कन्याएँ तीन युगों में अवतार पुरुषों के साथ विवाह कर सकीं। मेनका की पुत्री पार्वती ने शिवजी के साथ विवाह किया। राजा जनक तथा धन्वा से पैदा हुई पुत्री सीता ने राम के साथ विवाह किया। वृषभ तथा कलावती की पुत्री राधा ने कृष्ण के साथ विवाह किया।)

ये बातें जानकर वे तीनों कन्याएँ तृप्त हुईं और विष्णु से आज्ञा लेकर चली गयीं।

हिमालय का राजा हिमवान अत्यंत सुंदर था। वह अपने पर्वत पर रहनेवाले सभी आश्रमों में जाता और वहाँ तपस्या करनेवाले देवताओं के कुशल-क्षेम जान लिया करता था। इसलिए उन लोगों ने मेनका के साथ उनका विवाह किया।

एक दिन हिमवान के पास ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र तथा अन्य देवता आ पहुँचे। हिमवान ने उनका स्वागत व आदर-सत्कार किया, तब उनके आगमन का कारण पूछा।

"महाशक्ति ने दक्ष के यहाँ सती नाम से जन्म लेकर शिवजी से विवाह किया और अपने शरीर का त्याग किया। सती की मृत्यु के बाद शिवजी विरक्त हो तपस्या कर रहे हैं। इस समय तारकासुर नामक व्यक्ति राक्षसों का राजा बनकर जगत के लोगों को सता रहा है। महाशक्ति पुनःजन्म लेकर शिवजी के साथ विवाह करके जब तक एक पुत्र का जन्म न देगी, तब तक तारकासुर लोगों को सताता ही रहेगा। इसलिए तुम तथा मेनका उस महाशक्ति के बारे में तपस्या करके उसे आपकी पुत्री के रूप में पैदा होने के लिए प्रार्थना करो।" देवताओं ने हिमवान को समझाया।

११३. एशिया की छत

सोवियत रूस, अफगनिस्तान तथा पाकिस्तान की सीमाओं के मिलने के स्थान पर पामिर पर्वत हैं। इनको 'एशिया की छत' अथवा 'दुनिया की छत' भी कहते हैं। उन पर्वतों का 'वखन मार्ग' एक समय पूर्वी तथा पश्चिमी देशों के बीच मध्य मार्ग बना हुआ था। ७०० वर्ष पूर्व मार्कोपोलो इसी मार्ग से पूर्वी देशों में आया था। इस मार्ग का उपयोग करना ख़तरे व साहस से पूर्ण काम है। चित्र में दिखाई देनेवाला प्रदेश २०,००० फुट ऊँचाई पर है।

Photo by Prabhakar Mahadik
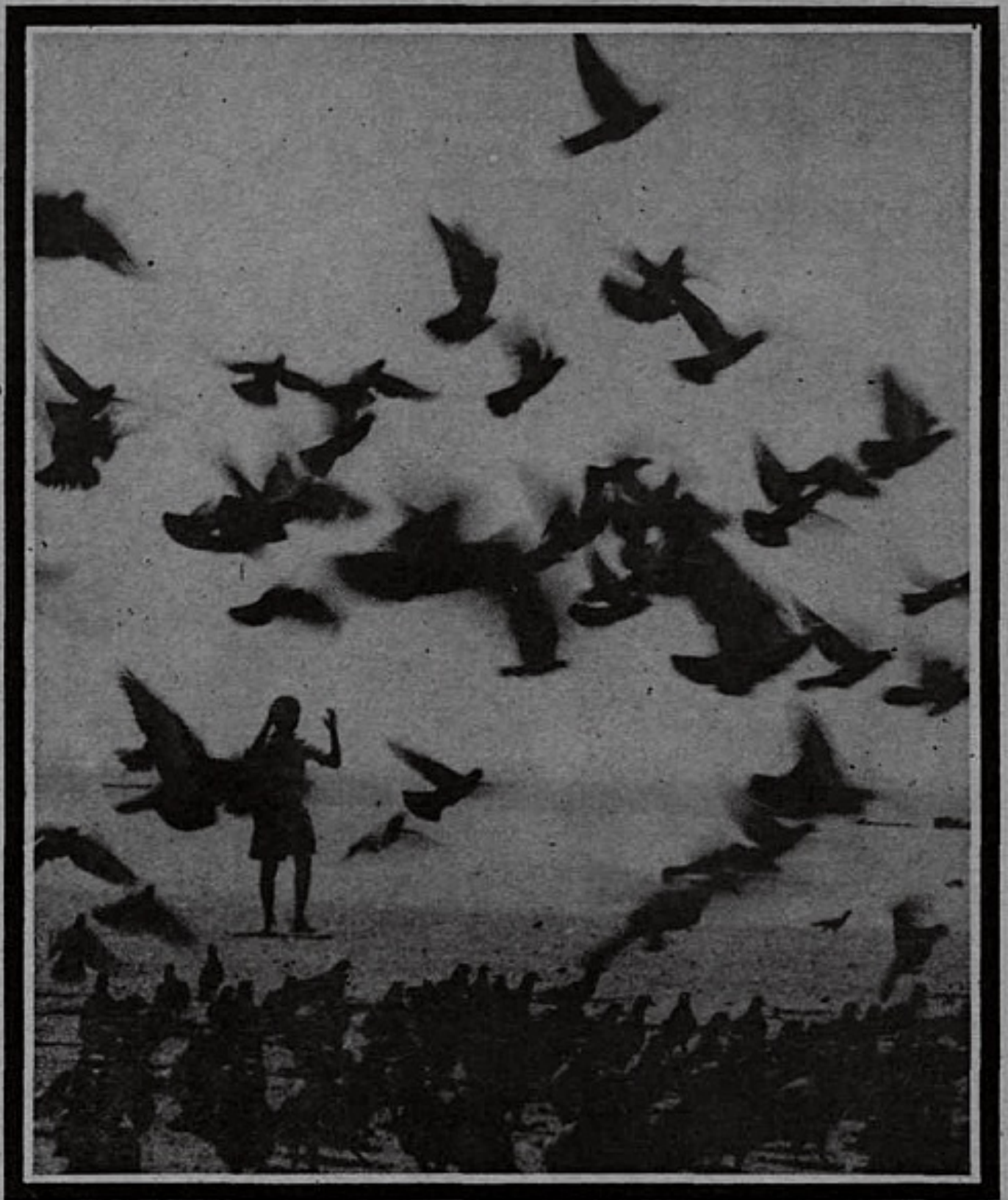
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

यह ज़िंदगी का मेला!

प्रेषक :
व्होरा असगर अली

Photo by Prabhakar Mahadık
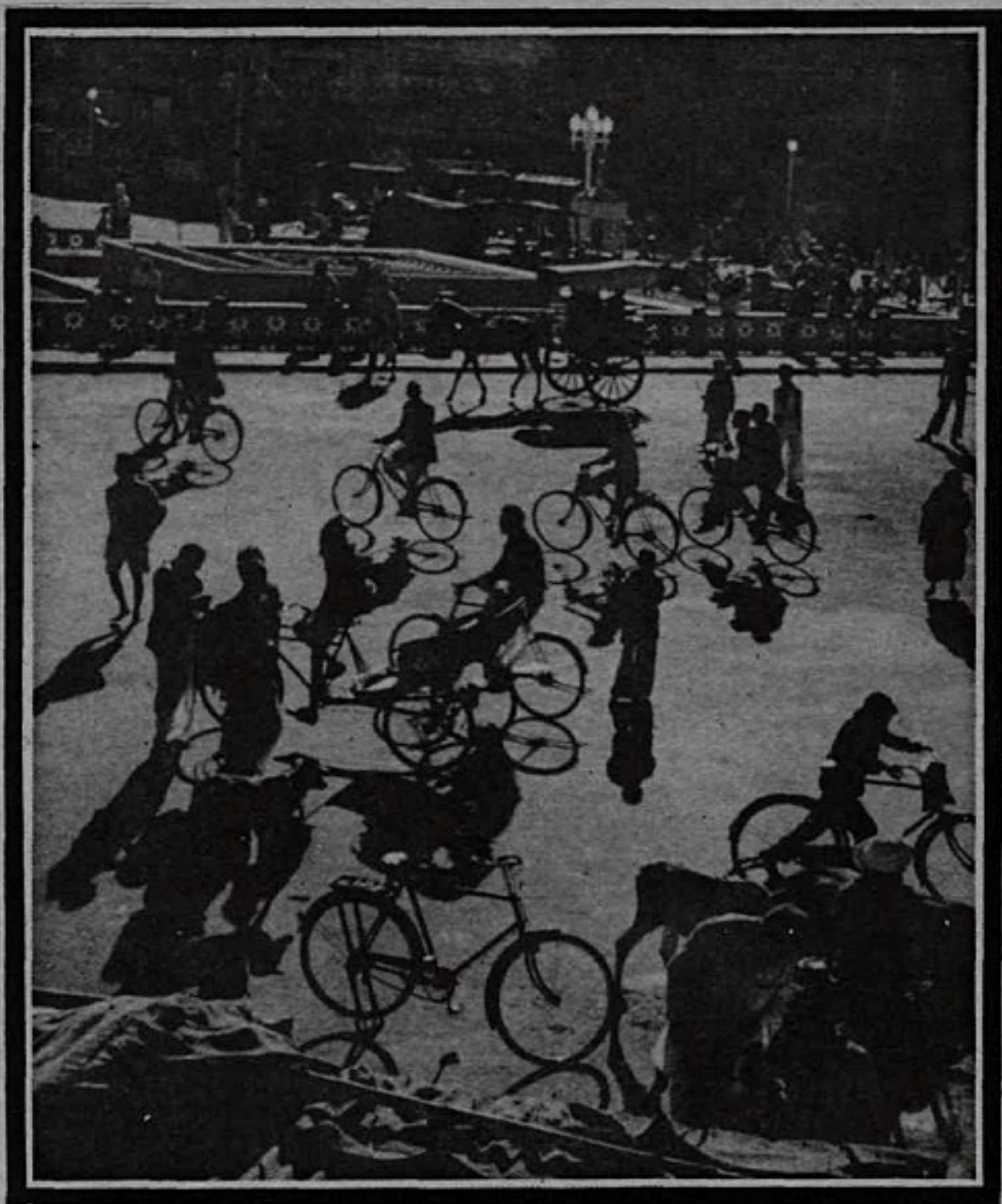
पुरस्कृत परिचयोक्ति

रह न सके कोई अकेला!

प्रेषक : ब्होरा असगर अली

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

जुलाई १९७१ :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख़ १० मई १९७१ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

मई – प्रतियोगिता – फल

मई के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गयी हैं। इनके प्रेषक को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **यह ज़िंदगी का मेला!**

दूसरा फ़ोटो: **रह न सके कोई अकेला!**

प्रेषक: **श्री ब्योरा असगर अली, युसुफ़ अली,**
लालबहादूर शास्त्री रोड़, दातारचोक, अंजार, कच्छ (गुजरात)

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

आप उदास क्यों हैं
लोटपोट
पढ़िए
लोटपोट
और हंसते हंसते
लोट पोट हो जाइए

Chiclets
Chiclets
Chiclets
Chiclets
Chiclets
Chiclets